आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 09 | उदयपुर बुधवार 15 मई 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

चित्तौड़ के किले पर देव-पुरुषों का रंगोत्सव

चित्तौड़गढ़ कई दृष्टियों से पूरे विश्व में अतुलनीय है। यहां का चप्पा-चप्पा अनेक प्रकार के रहस्यों, कौतुकों तथा चमत्कारों का साक्षी है। लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ की कृपा से मैंने इस किले के कई रहस्यों का आत्म-साक्षात्कार किया। उनके अनन्य सेवक बापूजी सरजुदासजी वैष्णव के साथ 8-9 नवम्बर 1984 को हरियाली अमावस्या पर लगने वाले एक अजूबे मेले का आंखों देखा हाल।

किलों की संस्कृति हमारे यहां बड़ी अजूबी, अनूठी, अलौकिक और कई प्रकार के रहस्य-रोमांचक किस्सों से भरी मिलेगी। इतिहास के पन्नों में बहुत कुछ पढ़ने पर भी लगता है जैसे बहुत कुछ जानना अभी शेष रह गया है। जानने की यह लालसा बराबर बनी रहती है। सैकड़ों बरसों से हजारों-हजार किस्से-कहानी और विविध घटना-प्रसंग लोकजीवन की मुख्यधारा से जुड़ते हुए भी नित नवीन लगते हैं और अद्‌भुत ताजगी लिए खण्डहरों में भी जीवन्त वैभव का एहसास देते हैं।

किलों में सिरमौर चित्तौड़ का किला कहा गया है- 'गढ़ तो चित्तौड़गढ़।' वास्तव में यह है भी। प्रारम्भ में यह चित्रकूट के नाम से बसाया गया। लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व चन्द्रगुप्त मौर्य ने इसे बसाया। इसकी प्रेरणा चन्द्रगुप्त को अपने भाइयों के झगड़े के दौरान मिली। झगड़े में चन्द्रगुप्त ने अपने भाइयों को ललकार दी और यह कहकर निकल पड़ा- 'यदि एक अलग चित्रकूट न बसाया तो असल मरद मत कहना।' आज जो डियर पार्क है, वही प्रारम्भ का चित्रकूट है।

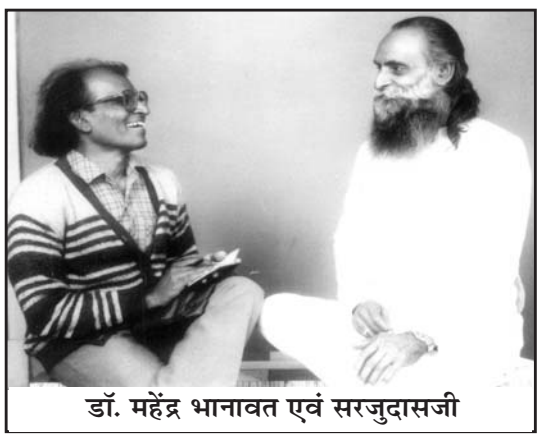

डॉ. महेंद्र भानावत एवं सरजुदासजी

इसे अजीब संयोग ही कहना चाहिये कि जब से चित्रकूट की नींव पड़ी तब से यहां रक्त ही बहता रहा। या तो यहां जौहर हुए या फिर जुद्ध-युद्ध। जुद्ध और जौहर का ही तो इतिहास है चित्तौड़। इसे कई मिटाने आये पर वे स्वयं मिट गये। चित्तौड़ आज भी अमिट अमर है।

इसी चित्तौड़ के किले पर बड़े विचित्र मेले भरते हैं। दीवाली की घनी अन्धेरी रात में भूतों का मेला और देव दीवाली को दिव्य आत्माओं मेला लगता है मगर कौन इन्हें देख पाता है। मनुष्य की कोई आंख इन्हें अपने में दृश्यमान नहीं कर सकती। लोकदेवता कल्लाजी की असीम कृपा से उनके सेवक सरजुदासजी के साथ ये दोनों मेले मुझे देखने को मिले।

कल्लाजी चक्रवात युद्ध के धनी थे। उन्होंने अपने हाथ में कभी ढाल नहीं ली। उनके दोनों हाथों में तलवारें रहती थीं जो आगे-पीछे ऊपर-नीचे जैसा चाहो वैसा वार कर गाजर मूली की तरह दुश्मनों का सफाया करतीं।

चित्तौड़ में कल्लाजी प्रतिमा

इन्हीं कल्लाजी ने मुझे यहां एक मेला ऐसा दिखाया जिसमें देवता मनुष्य वेश धारण कर अपनी लीला दिखाते हैं। यह मेला हरियाली अमावस्या का था जो गत पांच सौ वर्षों से भर रहा है। मोती बाजार से लेकर कालिका मन्दिर तक भरने वाले इस मेले में अधिक भीड़ नहीं होती। यह अब तो सांध्यकालीन मेला ही अधिक रह गया है। इस मेले में हमारे साथ हिन्दी प्राध्यापिका कवयित्री डॉ. सुधा गुप्ता तथा मेरी बिटिया कविता भी थी।

सायं पांच बजे बिड़ला धर्मशाला से हम मेला देखने निकले। मोती बाजार से नर-नारियों और बच्चों की चहल-पहल शुरू हो गई थी। घूमते-घामते हम विजयस्तंभ पहुंचे। वहां चबूतरी पर अपने पांव लटकाये एक फुग्गे वाला देखा। उसके आसपास बच्चों की भीड़ थी। कल्लाजी ने हमें अंगुली का इशारा दिया। हम समझ गए कि फुग्गे बेचने वाला कोई देवपुरुष है। पास ही चाय की दुकान थी। बैंच पर बैठकर हम चाय की चुस्की लेते रहे और फुग्गे वाले को निहारते रहे।

यह फुग्गे वाला फकीर तहमत पहने था। कंधे पर झोली थी। कत्थई रंग के सिर के बाल और वैसी ही दाढ़ी थी। उसका एक हाथ छोटा था और छोटा ही एक पुराना पम्प था जिससे फुग्गे में हवा भर-भर कर बच्चों का मन बहला रहा था। उसकी निगाहें बड़ी नेक, सूरत बड़ी भोली और शक्ल बड़ी सौभ्य थी। बच्चे उससे फुग्गे ले-लेकर बड़े मस्त मगन हो रहे थे।

कल्लाजी हमारी उत्सुकता ताड़ गए फलस्वरूप वे हमें उसके नजदीक ले गए। हम उसके पास जाकर खड़े हो गए। हमारे जाने से उसमें कोई फर्क नहीं पड़ा। वह अपने काम में खोया रहा। हां, वाणी तो हम नहीं सुन सके पर हमें यह अवश्य लगा कि कल्लाजी और उसके बीच कोई वार्तालाप जारी है। सुनने को तो हम उस फकीर से यही सुन पाये-'फेरफार तो करनोई पड़ै।' दोनों खूब मुस्कराये।

इतने में सुधाजी ने एक फुग्गा लेने को कहा। उसने झोली में हाथ डाला। एक फुग्गा-ककड़ी निकाली। पम्प से उसमें हवा भरी और कविता को थमा दी। उसका रंग नीला था।

सुधाजी ने एक रूपया दिया तो उसने अपना कमीज ऊंचा कर बनियान की जेब से पैसों की पोटली निकाली और उसमें से एक अठन्नी निकाल देनी चाही पर हमने नहीं ली और हाथ जोड़कर वहां से आगे बढ़े। फकीर अपने हाल में मस्त था। उसने हमारी ओर देखा तक नहीं परन्तु हम तो उसे कदम-कदम पर पीछे मुड़-मुड़ कर घूर-घूर कर देखते आगे चलते रहे।

चलते-चलते हम पत्ता महल पहुंचे। मुख्य द्वार से ज्योंही हमने भीतर प्रवेश किया कि महल से एक बूढ़ा व्यक्ति आता दिखाई दिया। उसके सिर पर मेवाड़ी लहरिया बंधा था। ऊंची धोती और अंगरखी पहन रखी थी। अपने दोनों हाथों से उसने अपने कंधे पर रखी लकड़ी थाम रखी थी। हमने उसे हाथ जोड़कर नमस्कार किया। उसने बड़ी मुस्कान के साथ हमारा अभिवादन स्वीकार किया। अपनी सफेद दाढ़ी में वह व्यक्ति बड़ा ही सरल सौम्य चित्त का था। हम उसे निहारते रहे पर उसने पीछे मुड़कर झांका तक नहीं।

पत्ता महल में केवल हम ही थे। मूल महल में नीचे दीवाल के भीतर आमने-सामने भैरूजी व पत्ताजी के थानक हैं। भैरूजी के दर्शन कर हम पत्ताजी के थानक गये। वहां गरमागरम मालपुओं से भरा दोना देख हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। हमने इधर-उधर देखा कि किसी ने चुपचाप कोई करिश्मा तो नहीं कर दिया पर वहां कोई नहीं था। बापूजी ने वह दोना उठाया और मालपुए देते हुए हमें कहा- 'आज के दिन घर-घर में मालपुए बनते हैं फिर आप कैसे इनसे वंचित रहते। यह प्रसाद पत्ताजी ने भेजा है। इसे ग्रहण करो।' हम प्रसाद रूप में मालपुए खाते रहे और आश्चर्य मग्न होते रहे।

पत्ता महल

यहां से हम एक दूसरे रास्ते से पुन: लौटे। बीच में हमने आदिवासी नर-नारियों के गाते-नाचते-ठुमकते बड़े उल्लसित झुंड देखे। ध्यानपूर्वक देखने से पता लगा कि ये सब देव-पुरुष हैं जो मेले से अलग अपनी मौज में खोये हुए हैं।

कुम्भा महल आते-आते मेलार्थियों के बीच हमने एक ऐसा व्यक्ति देखा जो अपने एक पांव पर अधिक जोर देकर चल रहा था। उसका शरीर बड़ा काला था। उसने सफेद पाजामा पहन रखा था और सफेद धारीवाला काला कमीज बड़ा साफ-सुथरा लग रहा था। हमने थोड़ी दूर स्थिर रह उसे देखा। वह भी हमें देखता हंसता मुस्कराता धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहा। उसके भंवरे जैसे काले घुंघराले बाल थे और दांत सर्वाधिक चमकीले और सुन्दर लग रहे थे। बड़ा अचरज यह रहा कि हम उसे देखते रहे और वह हमें देखता-देखता कैसे कहां अलोप हो गया, पता ही नहीं चला।

मेले तो हमने कई देखे मगर ऐसा स्वप्नजगा मेला कभी नहीं देखा। इस मेले ने जहां हमें कभी न भूली जाने वाली यादें दीं वहां मालपुए का वह स्वाद और ककड़ी वाला फुग्गा तो आज भी हमारी अनमोल धरोहर बना हुआ है।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

श्रीजी मेवाड़ को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

एच.आर.एच. ग्रुप ऑफ होटल्स के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्रीजी अरविन्दसिंह मेवाड़ को इंटरनेशनल होस्पिटैलिटी कौंसिल (आई.एच.सी.) ने अपना प्रतिष्ठित लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड-2018 नई दिल्ली में आयोजित समारोह में प्रदान किया। उन्हें यह सम्मान पांच दशकों से आतिथ्य उद्योग की संवृद्धि के लिए दिये जा रहे सराहनीय मार्गदर्शन एवं योगदान के लिए प्रदान किया गया।

समारोह में आई.एच.सी. के निदेशक अब्दुल्ला अहमद ने श्रीजी अरवन्दिसिंह मेवाड़ को शॉल, प्रमाण पत्र एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर आई.आई.एच.एम. के प्रो. डी. घोष, कई वरिष्ठ सदस्य, विद्यार्थी तथा एच.आर.एच. ग्रुप ऑफ होटल्स के वरिष्ठजन उपस्थित थे। इस अवसर पर मेवाड़ ने कहा कि आज मुझे अवार्ड प्राप्तकर गर्व की अनुभूति हो रही है। मैं इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट को देश-विदेश के दस कैम्पस में आरम्भ की गई आतिथ्य सेवा एवं उसकी शिक्षा की व्यवस्था के लिए बधाई देता हूँ।

बचपन को बचाना जरूरी है

माता-पिता की अति महत्वाकांक्षाओं ने बच्चों के बचपन को लील लिया है। नारी समाज द्वारा आर्थिक दौड़ में सम्मिलित होने से मां-दादी-नानी की गोद भी बच्चों से छिन गई है। ये विचार स्वतंत्रता सेनानी देवेन्द्र काका के 95वें जन्म दिवस पर आयोजित बाल सभा को संबोधित करते सामाजिक प्रचेता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि बचपन को बचाने के लिए हमें अपनी महत्वाकांक्षाओं को छोड़ना होगा। देश की माटी के साथ खेलता-कूदता हुआ बचपन जब बड़ा होगा तो वह इस देश की संस्कृति को सुरक्षित रखेगा। सभा को शिक्षाविद् गणपत धर्मावत, लक्ष्मी जैन तथा चावली चौधरी ने भी सम्बोधित किया।

पंडितजी की सीख

- काव्या मेहता -

मेरे नाना ख्यातिलब्ध साहित्यकार हैं। उनसे जब भी मिलना होता है कई तरह की नई जानकारियां पाकर मजा आता है। कभी-कभी वे ऐसी घटनाओं का जिक्र करते हैं जिनसे सभी लोग खूब हंसते हैं पर अकेले में भी जब उन्हें याद करते हैं तो हंसे बिना नहीं रहते हैं।

एकबार वे अपने मित्र के साथ एक साहित्यिक समारोह में कोटा गये। लौटते वक्त एक मित्र के आग्रह पर बूंदी उसके घर गये। वे दिन भयंकर गर्मी के थे। मित्र के घर उन्होंने देखा कि एक आलीशान कमरे में उसके पिता अपने हाथ में पंखी लिए अध्ययन में तल्लीन थे।

उन्हें देख नाना को बड़ा आश्चर्य हुआ कि पंखा और बीजली होते हुए भी वे उसका उपयोग नहीं कर पढ़ने में मशगूल हैं। नमस्कार कर नाना ने उनसे पूछा, 'क्षमा करें पंडितजी, इस बेहद गर्मी में भी आपने पंखा बन्द कर रखा है और हाथ की पंखी भी नहीं हिल रही है।'

चश्मे के ऊपर से अपनी आंखें निकालते बड़ी शालीनता से वे बोले- 'अजी, इस पूरे कमरे में मैं अकेला हूं और यह पंखा है जो सब तरफ हवा फैंकता है जिसकी आवश्यकता नहीं है।

मुझे भी हर समय अपने पूरे शरीर को हवा नहीं चाहिये। जब-जब और जहां-जहां जिस समय मुझे हवा की जरूरत महसूस होती है, मैं पंखी हिला देता हूं और अपने हाल में मस्त रहता हूं।'

कभी जब हम सब फुर्सत में होते हैं और नानाजी मिलते हैं तब उस घटना की याद दिलाकर जोर का ठहाका लगाते हैं।

हिममानव के पदचिन्ह

येति मिल गया है। हां, उसके साक्षात् दर्शन तो अभी नहीं हुए हैं पर उसके चरण चिन्ह भारतीय सेना के

सौजन्य से जरूर उपलब्ध हो गए हैं। सेना की तरफ से हाल ही में एक ट्वीट जारी की गई थी, जिसमें इस मिथक मानव के कदमों के निशान दूर तक तस्वीरों में देखे जा सकते हैं।

सेना का कहना था कि उसका एक पर्वतारोही दल मकालू शृंखला पर लगभग साढ़ तीन हजार मीटर की ऊंचाई पर था, जब उसे अचानक इस भीमकाय आदि मानव के पैरों के निशान बर्फ पर अंकित मिले थे। सेना के दल ने उनकी फोटो तो ली ही साथ-साथ पैरों की पूरी माप-तोल भी कर ली थी।

येति अपने आप में एक बड़ा ही रोचक जीव है, जिसकी खोज पिछली दो सदियों से बड़े जोर-शोर से चल रही है। इस हिममानव का जिक्र बहुत सारी नेपाली और तिब्बती किस्सों-कहानियों में भी आता है। चूंकि पदचिन्ह सेना ने जारी किये थे इसलिए ट्विटर पर राष्ट्रवादी ताकतों ने उसको बेहद गम्भीरता से लिया।

- अश्विनी भटनागर,
जनसत्ता 5 मई 2019, पृ. 8

डॉ. महेन्द्र भानावत ने वर्षों पूर्व हिममानव पर जो टिप्पणी लिखी वह इस प्रकार है-

पाण्डू के साथ कुंती हमेशा रही। तब माण्डू की बस्ती इन गुफाओं से दूर थी। पाण्डू फिर हिमालय गलने चले गये। वहां जाकर चोला बदल लिया। अब जो हिममानव कहलाते हैं, वे ये ही पाण्डव हैं। द्रोपदी भी इनके साथ है। सब अभी भी तपस्यारत हैं। ये संत हैं।

संत दस-दस हजार बरस की तपस्या करते हैं। फिर इन पाण्डवों को तो अभी ढाई हजार बरस मात्र हुए हैं। ये पाण्डव हवा-भक्षी हैं। फल खाते हैं। पाप से सदा दूर रहते हैं। हिमालय में तो सदा ही पापनाशिनी गंगा का प्रवाह है। प्रायश्चित के लिए वे वहां गये तो अमर हो गये।

ये हिममानव ग्यारह-साढ़ा ग्यारह हाथ के हैं। इनकी वाणी तब की ही वाणी है जिसे कोई आज का मनुष्य नहीं समझ सकता। पाप की छाया तक इन्हें नहीं लग पाये इसीलिए ये मनुष्य से सदा दूर रहते हैं और उसे देखते ही भाग जाते हैं। ऐसे संत हमारे देश में अन्यत्र भी तप रहे हैं। राजस्थान में बांसवाड़ा के पहाड़ों में कोई तीन हजार बरस पुराना एक संत है जिसके एक टांग ऊंट की और एक मानव की है।

- निर्भय मीरां, 1994,
परिशिष्ट, पृ. 25

सुश्रावक धींग नहीं रहे

डॉ. दिलीप धींग के ताऊजी बम्बोरा के सुश्रावक श्री शान्तिलाल धींग का 85 वर्ष की आयु में 9 मई को स्वर्गवास हो गया। उनका जीवन सादगीमय और स्वावलम्बी था। युवावस्था में ही आचार्य श्री नानेश की प्रेरणा से उन्होंने मृत्युभोज का त्याग कर दिया था। वहां के जैन स्थानक निर्माण में उन्होंने अपना धन, समय और श्रम लगाया। नित्य सामायिक, चौविहार रात्रि भोजन त्याग सहित अनेक व्रत-नियमों से उनका जीवन मर्यादित था। शब्द रंजन की श्रद्धांजलि।

स्वयंवर में द्रोपदी-अर्जुन

- दिनेश रावत -

स्वयंवर शुरू होता है। एक के बाद एक करते हुए सभी राजा आगे बढ़ते हैं लेकिन असफल रहते हैं। अंतत: उसमें वेश बदलकर पहुँचा अर्जुन आगे बढ़ता है और तीर-कमान संभालकर स्वयंवर की शर्त जीत लेता है।

शर्तानुसार द्रोपदी को उसे ही जयमाला पहनानी होती है, मगर विद्रूप अर्जुन को देख द्रोपदी जयमाला पहनाने से मना करते हुए आगे नहीं बढ़ती। इस दौरान अर्जुन और द्रोपदी के मध्य जो संवाद होता है, उसे लोकगीत की इन पंक्तियों में बयां किया गया है-

पंडौं कऽ बोलोंऊ प्यारा पंडवाणा अर्जुनाऽ
ज्वाईऽ नाऽ बणौणुऽ तौंऽ
थातरूऽ कीईइइ बणौनूऽ दुरूबअ
थातरूईऽ सौबीइ रौंऽ।

अर्थात् हे पांडवों के अर्जुन! मैं किसी भी शर्त पर तुम्हें पति स्वीकार नहीं कर सकती। यदि मुझे विवश किया गया तो हरी-भरी दुर्बा बन मैदान में ही समाहित हो जाऊँगी।

गोड़ै कू बणौनू बछड़ा
थातरूई चरिई खोनू बाई तौंऽ।

अर्जुन उत्तर देता है। हे ऋषि-मुनियों की बहिन! मैं हर हाल में तुम्हें पत्नी बनाकर ही रहूँगा। यदि तुम दुर्बा बन जाओगी तो मैं गाय का बछड़ा बन तुम्हें चर जाऊँगा।

ऋषियों की बोलोंऽ दियाणी द्रोपते
जवाईं न छोणौनू तौं
बाज कू होई जौलू ले पोथुलू
चीरी तोड़ी खोनू तौं।

द्रोपदी बोली यदि मुझे विवश किया गया तो मैं मोनाल बनकर दूर जंगलों में जीवन बिता लूंगी। अर्जुन कहता है- तब मैं बाज का बच्चा बन तुम्हारे पीछे-पीछे पहुँच जाऊँगा और तब भी नहीं मानोगी तो तुम्हारी देह के चिथड़े-चिथड़े कर तुम्हें नोच खाऊँगा। यह सुन द्रोपदी कहां चुप रहती है। कहती है-

पंडौं क बोलो प्यारा पंडवाणा अर्जुना
जवाई न बणौनु तौं
डांडू की होई जाउ मुई मृगुली
डांडुई-डांडू सोबी रौं
ऋषियों की बोलोंऽ दियाणी द्रोपते
जवाईं न छोणौनू तौं
जंगल कू होई जौं नू बंदुक्या
हाकि के मारूनू तौं

अर्जुन! मैं किसी भी तरह तुम्हें अपना वर स्वीकार नहीं कर सकती। यदि जबरदस्ती हुई तो मैं मृगी बनकर वनों में रहने लग जाऊँगी। द्रोपदी की यह बात सुन अर्जुन कहता है- अरे ऋषियों की बहिन द्रोपदी! यदि तुम मृगी बन जाओगी तो मैं बंदूकधारी शिकारी बनकर तुम्हारे पीछे-पीछे पहुँच तुम्हें भून खाऊँगा।

पंडौं क बोलों प्यारा पंडवाणा अर्जुना
जवाई न बणौनु तौं,
गाडू की होई जौनू मुई मछली
गाडूई सोबी रौनू
ऋषियों की बोलोंऽ दियाणी द्रोपते
जवाईं न छोणौनू तौं
गाडू कू होई जोनू मुई उदर
तेखी मारी खोनू तौं।

अर्जुन के ये वचन सुनते ही द्रोपदी त्वरित जवाब देती है- यदि तुम मेरा पीछा करते रहे तो मैं मीन बन नदी में समाधिस्थ हो जाऊँगी। अर्जुन प्रतिउत्तर में कहता है- तुम नदी में समा जाओगी तो मैं वहाँ भी तुम्हे चैन से नहीं रहने दूंगा और उदर अर्थात् बतख बनकर तुम्हें नोच-नोच खाऊँगा।

नृसिंह जयंती 17 मई पर विशेष

नृसिंह की सवारी

समस्त धरा पर दो तरह की प्रवृत्तियों की व्याख्या की गई है। प्रथम वैष्णवी प्रवृत्ति तथा द्वितीय आसुरी या दानवी प्रवृत्ति। धरती पर जब कभी भी अत्याचार का बोलबाला बढ़ा, भगवान ने विभिन्न रूपों में प्रकट होकर आसुरी प्रवृत्ति का समूल नाश किया।

सदियों से भारतभूमि पर देवताओं के समय-समय पर जन्म लेने की परम्परा चलती आई है। धरती पर मात्र जल था तब भगवान ने मत्स्यावतार में प्रकट होकर मानव मात्र की रक्षा की। उभयचर प्राणियों का उद्‌भव होने पर कुर्मावतार में भगवान का प्रकट होना माना गया।

भगवान विष्णु सभी अवतारों के केन्द्र रहे हैं। हमारे धर्मशास्त्रों में यह कहा गया है कि जब-जब भी धरती पर अत्याचार बढ़ा है तब-तब धर्म की रक्षा करने देवताओं ने जन्म लिया है। इन्हीं रूपों में भगवान विष्णु के विभिन्न रूपों की व्याख्या की जाती है। विष्णु के नाना रूपों में रामावतार, कृष्णावतार, वराहावतार, नृसिंहावतार, हनुमन्तावतार आदि चौरासी करोड़ अवतार माने गए हैं। इनमें नृसिंह अवतार की महिमा को उत्तम माना गया।

इस सम्बन्ध में एक कथा प्रचलित है। कहते हैं कि दानव हिरण्यकश्यप की आसुरी प्रवृत्तियों से धरती पर त्राहि-त्राहि होने लगी। हिरण्यकश्यप ने मन्दिरों को नष्ट करने का आदेश दिया। साधु-सन्तों को मारा-काटा जाने लगा।

भगवान का नाम लेने पर पाबन्दी लगा दी गई। स्वयं को भगवान घोषित कर दिया। ऐसे में उसके पुत्र प्रहलाद ने भगवान विष्णु की भक्ति प्रारम्भ कर फिर से लोगों का ध्यान ईश्वर की आराधना में लगाने की विनती की।

हिरण्यकश्यप ने तपस्या के बल पर भगवान से वरदान प्राप्त किया कि वह न तो वह जल में मरेगा न ही

थल पर। न दिन में मरेगा न रात में। न नर के हाथों मरेगा न ही राक्षस के हाथों।

वरदान प्राप्त करने के बाद वह दानवी प्रवृत्तियों की हदें पार करने लगा। अपने पुत्र प्रहलाद को भी हाथी के पैरों तले कुचलवाने, ऊंचाई से नदी में डालने तथा होलिका की गोद में बिठा आग में जलाने के नाना प्रयास किए गए। अत्याचार बढ़ते चले गए लेकिन प्रहलाद भक्ति के मार्ग से टस से मस नहीं हुआ। प्रहलाद को विश्वास था कि समस्त धरती के रखवाले तो भगवान विष्णु हैं।

अत्याचारी पिता ने प्रहलाद से भगवान के अस्तित्व के बारे में सवाल किया तो प्रहलाद ने कहा, आप में, मुझमें, तमाम प्राणियों में, सजीव में, निर्जीव में, मेरे प्रभु सभी जगह हैं। हिरयण्कश्यप ने लौहस्तंभ की ओर इशारा कर कहा कि क्या इसमें भी तुम्हारे प्रभ हैं? प्रहलाद द्वारा स्वीकारोक्ति जताने पर हिरण्यकश्यप ने पूरी ताकत के साथ खम्भे पर प्रहार किया।

प्रहार के साथ ही खंभा टूटा और भगवान विष्णु नर और सिंह के रूप में प्रकट हुए। उसी समय भगवान नृसिंह ने हिरण्यकश्यप को अपने वरदान के विपरीत अपनी गोद में उठा धड़ और सिर को अलग कर दिया। तब से ही वैशाख शुक्ला चतुर्दशी के दिन नृसिंह जयंती मनाई जाती है।

उदयपुर जिले में भी नृसिंह जयंती के अवसर पर मन्दिरों में श्रद्धालुओं की चहल-पहल देखते ही बनती है। गांवों में विभिन्न स्थानों पर भजन-कीर्तन तथा नृसिंह की झांकी प्रस्तुत की जाती है। उदयपुर में रावजी का हाटा स्थित नृसिंह भगवान मन्दिर में बड़े भव्य कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

पंचायत समिति भीण्डर में नृसिंह जयंती लगभग सौ सालों से मनाई जा रही है। यहां बड़े भव्य रूप में नृसिंह भगवान की सवारी निकाली जाती है। सवारी में नृसिंह की भूमिका में कलाकार बड़ा ही भव्य स्वरूप लिये सबके आकर्षण बनते हैं। **-डॉ. तुक्तक भानावत**

बैरागीजी इच्छा-मृत्यु के अमर व्यक्तित्व थे

- डॉ. पूरन सहगल -

यदि यह संसार नश्वर है तब इसमें विचरण करने वाले जीव भी तो नश्वर ही हैं। संतों ने संसार को सराय कह कर चर्चित किया है। मनुष्य जन्म लेते हैं, कर्म करते हैं और समयावधि पूर्ण होने पर असार संसार से बिदा हो जाते हैं।

पंच तत्व का यह शरीर है जिसमें परमेश्वर ने प्राणों का संचार किया है। ये प्राण परमात्मा का ही अंश माने गए हैं। परमात्मा ये प्राण पंच तत्व के स्वयं द्वारा बनाए पुतले में संचारित कर इसे चलित कर देता है। चाबी वाला यह पुतला तभी तक चलता रहता है जब तक इसमें भरी चाबी का प्रभाव समाप्त नहीं हो जाता।

संतों ने यह भी कहा है कि, यह पुतला एक पिंजरे के समान है। इसमें दस द्वार हैं। इस दस द्वारों वाले पिंजरे में प्राण रूपी पंछी आनंद से बैठा रहता है। चाहे तो उड़कर मुक्त हो जाए किन्तु पिंजरे में उसे दाख-अंगूर आदि मीठे फल खाने को मिलते हैं।

उनके मोह में वह पंछी मस्त बैठा रहता है किन्तु जब पिंजरे में रहने की अवधि समाप्त हो जाती है तब वह परमात्मा का आदेश मान कर कभी मन से और कभी बेमन से फुर्र हुआ परमात्मा में विलीन हो जाता है। तब परमात्मा उसे एक और नया पिंजरा प्रदान कर देता है। इसी प्रक्रिया को गीता में कहा है-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृहणति नरोऽ पराणि।
शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि नवानि देही।।

महात्मा कबीर कहते हैं-

दस द्वार का पींजरा, जां में पंछी पौन।
रहिबे को अचरज बड़ो, गए को अचरज कौन?

दस द्वारों वाले पिंजरे में वह प्राण-पंछी बैठा रहता है। इस बात का तो आश्चर्य हो सकता है किन्तु यदि उड़कर चला जाय तब इसमें कैसा आश्चर्य!

भले ही पंछी पिंजरे से मुक्त होकर उड़ जाय किन्तु जितने दिन वह पिंजरे में रहा, मीठे-मीठे गीत सुनाए, कई अद्‌भुत क्रीड़ाएं कीं वे सब हमारी स्मृति में सदा बनी रहती हैं। भले ही हमने वह पिंजरा भी समाप्त कर दिया किन्तु समृतियां समाप्त नहीं होतीं। जन्म से मृत्यु के सांसारिक जुड़ाव सदा याद आते हैं। शरीर भले ही अमर न हो किन्तु स्मृतियां तो अमर रह जाती हैं।

दादा बालकवि बैरागी ऐसे ही पंछी थे जिन्हें भूल पाना बहुत कठिन है। ऐसे ही लोग मृत्युंजयी कहे जाते हैं। इसी कारण महात्मा कबीर ने कहा है- 'हम न मरिहें, मरिहें संसार, हम को मिला है तारनहारा।' यह संसार ही नश्वर है। मरेगा तो यह संसार ही मरेगा। हम नहीं मरेंगे। क्योंकि हमें तो तारनहार मिल गया है।

दादा बैरागी की तारनहार थी मां सरस्वती। उस वाग्देवी ने उन्हें जो सृजनशीलता प्रदान की वही उन्हें सदा-सदा जीवित बनाए रखेगी। इसीलिए वे आज भी हमारे बीच जीवित हैं और भविष्य में भी युगों-युगों तक अमरत्व को धारण किए रहेंगे। संत पीपाजी की एक साखी प्रसिद्ध है-

जिनके घट सुरसत बसे, कंठ कवित्त, संगीत।
पीपा वे नर नी मरैं, अमर रहें जुग जीत।।

जिनके हृदय में सरस्वती का वास हो, कण्ठ में कविता और संगीत हो, ऐसे लोग कभी नहीं मर सकते। वे शरीर त्यागने के पश्चात भी सदा जीवित रहते हैं। अमर रहते हुए युगजयी कहलाते हैं। दादा बैरागी भीष्म पितामह की भांति इच्छा मृत्यु के वरदानी अमर व्यक्तित्व थे।

मेरी पुस्तक सीता सुलक्षणी के विमोचन पर मैंने अपने उद्‌बोधन में कहा था- 'मैं निरंतर लोकसाहित्य में शोध करना चाहता हूँ। मेरी इच्छा है कि, जब मैं मरूं तब लोकसाहित्य पर शोधरत रहता हुआ मरूं।'

मेरे कथन पर उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा- 'साहित्यकार कभी भी नहीं मरता। इससे ऊपर लोकसाहित्यकार तो मर ही नहीं सकता। वह युग-युगान्तर तक लोक में चर्चित रह अमर हो जाता है।'

बैरागीजी की नाभी में कस्तूरी थी। उसी कस्तूरी गंध को उन्होंने अपनी कविताओं में बांटा। उन कविताओं में रची-बसी सुगंध आज भी उनकी कविताओं में विराजमान है। वे कस्तूरी मृग की भांति अपनी कस्तूरी की खोज में वन-वन भटके नहीं अपितु उन्होंने अपनी कस्तूरी नाभी को जाना-समझा पहचाना और उसकी गंध-सुगंध से काव्य-जगत को महका दिया। उनकी गंध-सुगंध का आनंद उनकी किताबों में समाया हुआ है। एक शायर का यह शेर थोड़े परिवर्तन के साथ कह रहा हूँ-

लो चले जाते हैं तुम्हारी बज्म में यारों।
अब हम अपनी किताबों में मिलेंगे तुमसे।।

दादा के दर्शन अब हमें उनकी सृजित पुस्तकों में होंगे। वे हमें अपनी दर्द दीवानी, चटक म्हारा चम्पा, वंशज का वक्तव्य, आलोक का अट्‌टहास, मनुहार भाभी और बिजूका बाबू जैसी कालजयी किताबों में मिलेंगे। कभी पनिहारी गाते, कभी लखारा सुनाते और कभी बेटी की बिदाई जैसी अपनी रचनाओं के शब्द-शब्द में किसी बिटिया को बिदा करते दिखेंगे तो कभी यह कहते हमें ऊर्जा प्रदान करते मिल जाएंगे-

आकाश उतना ऊंचा नहीं है
जितना कि, लगता है.....
बन कर तो देखो मनुष्य
पाओगे कि
मनुष्य देवों से भी लाख गुना बड़ा है।

1983 में उन्होंने यह कविता लिखी जो आज भी हमें उनके जीवन दर्शन का बोध करवाती है-

हर दिशा खामोश है / शायद उजाला आएगा।
चन्द किरनें भेंट में / शायद हमें दे जायेगा।
किन्तु मितवा / रात काली / और गहरी हो न जाये
और ये गूँगी दिशाएं / ठेठ बहरी हो न जायें।
इसलिए तुम आज ठहरो /
सोच लो / मत दो बधाई।
हो न हो यह रस्म साली / कल करा दे जग हंसाई।

यह कविता लिख उन्होंने अपने बैरागीपन को उजागर कर दिया था। यह जीवन भी तो संसार की भांति नश्वर है। क्षणभंगुर है। यह जानते हुए भी उनका रथ कभी रूका नहीं। उन्होंने अपना बैरागी चरित्र टूटने नहीं दिया। एक कविता में वे प्रभु को धन्यवाद देते हुए कहते हैं-

क्या नहीं दिया प्रभु ने मुझे!
सब कुछ दिया।
जल, थल, अनल, पवन और आकाश
घनघोर तम और प्रियतम, आकाश
चेतना, चिंतन, अच्छा, बुरा, सुरा, बेसुरा
सजल नयन, आकाशी भुजाएं
ऋतुएं और ऋचाएं
अपने और पराए / चाहे और अचाहे
यानि सब कुछ / नाम भी, वंश भी
अखिल भी, अंश भी, निर्माण भी ध्वंस भी
सब कुछ दिया प्रभु ने मुझे।

ऐसी ही अनंत कविताएं उन्हें सदा हमारे स्मृति पटल पर अंकित रखेंगी।

बैरागीजी कहते हैं- चार चवन्नी देकर प्रभु ने संसार में भेजा था। तीन चवन्नी खर्च हो गई है। चौथी चवन्नी शेष बची है। यह संदेश उन्होंने अपनी आयु के पिचहत्तर वर्ष पूर्ण होने पर अपने मित्रों को दिया था। इसे बहुत एहतिहात से खर्च करना है।

दादा ने अंतिम चवन्नी को बहुत सोच सम्भल कर खर्च किया। अपव्यय तनिक भी नहीं होने दिया। चवन्नी का अंतिम सिक्का व्यय होते ही उन्होंने अपनी जेब खाली करके दिखा दी और संसार मेले से बिदा हो गए। जाते-जाते दोहरा गए- 'अब तो अपनी किताबों में मिलेंगे तुम से।'

दादा का जीवन अभावों से शुरू हुआ। अभावों को उन्होंने स्वभाव बना लिया। संघर्ष से हारे नहीं। झुके नहीं, चुके नहीं और अंतिम चवन्नी खर्च करते-करते अध्यात्म की ओर अग्रसर हो संत समान जीवन को ढाल दिया। समस्त ग्रंथियों से मुक्त हो गए। निर्ग्रंथ हो गए। गीता ऐसे आदर्श व्यक्तित्व के लिए कहती है-

यो न हत्यति, न द्वेष्टि न शोचति न कांक्षति।
शुभाशुभ परित्यागी, भक्तिमान्यः स मे प्रियः।।

वे शूरवीर की तरह जिये और संत की भांति मृत्यु का वरण कर बिदा हो गए। हमने उनके शरीर को पंचभूतों में समाहित होते देखा किन्तु वे हमारे दिलों से कभी भी विदा नहीं हो सकेंगे। इसी को तो अमर हो जाना कहते हैं। इसीलिए तो कबीर ने कहा है- 'हम न मरिहें, मरिहें संसारा।'

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 15 मई 2019

सम्पादकीय

पाठ्यक्रम में राजनीति

पाठ्यक्रम में राजनीति का प्रवेश अथवा राजनीतिपरक पाठ्यक्रम किसी भी दृष्टि से स्वीकार्य नहीं कहा जा सकता। होने को तो राजनीति में भी स्वच्छता होनी चाहिये मगर जिस तरह की बयानबाजी, द्वेषपूर्ण चोचलेबाजी और आक्रामक बकझक देखने को मिलती है, उससे लगता है, राजनीतिक दलों ने अपनी गरिमा समाप्त कर दी है और प्रतिष्ठाजनित पहचान खो दी है।

दलों के नायकों ने दल को गौण कर अपना वजूद और वर्चस्व स्थापित कर दल की पहचान दलदली बना दी है। दल के नाम पर अपना चेहरा और अपने नाम का वोट प्रमुख हो गया है।

इसी तरह पाठ्यक्रम में सम्मिलित विशिष्ट जन की स्थिति हो गई है। ऐसे विशिष्ट जन भी अब विशिष्ट दल के सांचे बन गये हैं। अपने समय में जिस दल ने जिसे विशिष्ट मान पाठ्यक्रम में तरजीह दी, सत्ता परिवर्तन ने उसे बाहर कर उसकी जगह अपने दल द्वारा मान्य-स्वीकार्य व्यक्ति को पाठ्यक्रम में आसीन कर दिया।

ऐसा करणीय कर्म शालीन नहीं कहा जा सकता। यह करतब बाल-बुद्धि का परिचायक है और बच्चों में खेले जाने वाले उस खेल की याद दिलाता है जिसमें एक बच्चा दूसरे को घोड़ी बना सवारी करता है और जब दूसरे की बारी आती है तो वह घोड़ी बना बच्चा सवार बनता है और सवार बने को घोड़ी बना उस पर सवारी करता है। इस खेल के बोल हैं- 'उतर भीखा म्हारी वारी।'

किसी भी राष्ट्र के लिए शिक्षा सर्वाधिक और सर्वोच्च हथियार है। उस हथियार की चमक से ही राष्ट्र का नौनिहाल सर्वांगीण उन्नति कर राष्ट्र को सर्वोपरि बनाता है। दल के नेता ही जब शिक्षा के साथ ऐसा घिनौना खेल करते पाये जाते हैं तो वे यह भूल जाते हैं कि राष्ट्र के साथ-साथ अपने दल का भी वे कितना अहित कर रहे हैं।

पत्र-पिटारी

शब्द रंजन के 01 अप्रेल 2019 के अंक में मेरे पर लिखे 'मूमल और माण्ड की मथनी लिए दीनदयाल ओझा' लेख के लिए आभारी हूं। वस्तुत: जितना मैं हूं नहीं, उससे अधिक श्रेष्ठ भानावतजी ने बना दिया। इतनी आत्मीयता, पारिवारिकता और अपनापन अब विरल रूप में ही देखने को मिलता है।

लोकसाहित्य की रोग प्रतिरोधक क्षमता पर अध्ययन होना अभी शेष है। मेडिकल विज्ञान में इसे 'इम्यूनिटी' कहते हैं। अखण्ड ज्योति फरवरी 2019 के अंक में पृष्ठ 27 पर इसके तीन भेद माने हैं-

(1) बायलोजिकल इम्यूनिटी अर्थात् शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता।

(2) साइको इम्यूनिटी अर्थात् मन की रोग प्रतिरोधक क्षमता।

(3) स्पिरिचुअल इम्यूनिटी अर्थात् कष्टों को सहने की क्षमता, तपने की, परिष्कार की क्षमता।

मुझे लगता है लोक-गीतों, लोक-गाथाओं, व्रत-कथाओं, पड़-गायन, ख्याल, रम्मत तथा नृत्य आदि में उक्त तीनों प्रकार की रोग प्रतिरोधक क्षमता है। यही कारण है कि गांववासी या आदिवासी हमारे से अधिक रोग प्रतिरोधक शक्ति रखने वाले लोग हैं।

अगर पुन: प्राकृतिक आमोद-प्रमोद की ओर समूहगत ध्यान दिया जाय और भरत मुनि के नाट्य-शास्त्र के वर्णित दृश्यों को मंच पर नहीं, नैपथ्य में दिखाया जाय तो हम सैकड़ों अवगुणों से, जो टीवी से ग्रहण करते हैं, बच सकते हैं और अन्यों को बचा सकते हैं। पर यह बड़ा दुरूह कार्य है।

दुर्बल होती सद्भावना और प्रबल होती असद्भावना न केवल व्यष्टि स्तर पर अपितु समष्टि गांव, नगर, देश, प्रदेश के लिए भी खतरनाक है। मुझे याद आता है एक परम विदुषी जैन साध्वीजी का भजन। उसमें जो अपना भाई राज्य के रूप में गजारूढ़ है, उसकी सवारी चलती-चलती उसकी साध्वी बहिन तक आती है तब वह साध्वी बहिन भजन गाती है-

'वीरा म्हारा गजथकी उतरो, गज चढ़ियो ज्ञान नांहीं।'

आज सभी लोग दुर्गुणों के गज पर चढ़े हुए हैं।

- डॉ. दीनदयाल ओझा, जैसलमेर

मैंने बहुतों से बहुत कुछ सीखा : अर्थांक भानावत

सीबीएसई दसवीं के घोषित हुए परिणाम में सेंट पॉल सीनियर सैकण्डरी स्कूल के छात्र अर्थांक भानावत ने 97.2 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। अर्थांक ने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता एवं गुरुजनों को

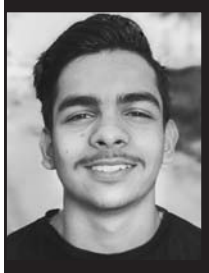

दिया है। उसने बताया कि यों तो मेरे पूरे परिवार का वातावरण ही पढ़ने-लिखने वालों की साहित्यिक अभिरूचि लिए है। दादा से लेकर बुआओं तक सभी पीएच. डी. धारक हैं और अपने-अपने क्षेत्र में नामचीन हैं। बड़े भाई शब्दांक भी प्रारम्भ से ही अच्छे परिणाम लिये रहे और अभी आईआईटी बोम्बे में अध्ययनरत हैं। इसलिए अपने अध्ययन के लिए मुझे स्वत: ही पढ़ने-लिखने और निरन्तर पुरुषार्थ करने की प्रेरणा मिलती रही।

चापलूस सभासद

माण्ड प्रदेश के जैसलमेर राज्य में विक्रमी 13वीं शताब्दी में महारावल लखनसेन राज्य करते थे। उनका स्वभाव भोला था। महारानी सोढ़ी ने उनको वश में कर लिया था। उसने उनके भोले स्वभाव का फायदा उठाकर अपने पीहर के लोगों को उच्च पदों पर बैठा दिया जो चापलुसी द्वारा सोढ़ी रानी एवं महारावल को खुश रखते थे।

एक समय सर्दी का मौसम था। रात्रि को नगर के पास बनी पहाड़ी पर सिंयाल, गीदड़, लोमड़ी आदि सर्दी के कारण कू कू कू कू चिल्ला रहे थे। रावल ने पूछा -'मेरे राज्य में कौन इतने दुखी हैं? ये कौन रो रहे हैं?'

चापलूस सभासदों ने उत्तर दिया- 'महाराज! सिंयाल, गीदड़ आदि सर्दी के कारण कूक रहे हैं। महारावल ने कहा- 'इनके रहने के लिए मकान बनाए जाए।'

मकान बनकर तैयार हो गये। कई दिनों बाद पुन: महारावल ने कू कू कू कू की आवाज सुनी। दूसरे दिन राजसभा में उन्होंने सभासदों से पूछा- 'अब क्यों रो रहे हैं?' चापलूस सभासद बोले - 'महाराज उनके वस्त्र एवं भोजन नहीं हैं।' महारावल ने कहा- 'उनके ओढ़ने-बिछाने के लिए वस्त्र एवं भोजन की व्यवस्था की जाए।' सभासदों ने तुरन्त व्यवस्था की। कई दिन बीत जाने के बाद महारावल ने फिर वही कू कू कू कू की आवाज सुनी। तब सभासदों से सवाल किया- 'अब क्यों कू कू कू कू हो रहा है।' सभासद क्या बोलते। उन्होंने उत्तर दिया-'महाराज! वे सब मिल आपको आशीर्वाद दे रहे हैं।

आज भी जैसलमेर के आसपास सिंयालों की शालों के नाम से कई परशालों के खण्डहर साक्ष्य के रूप में देखे जा सकते हैं।

- नंदकिशोर शर्मा

डोकरा साब

- युक्ता मेहता- -

बात गत वर्ष की है। सीकर जिले में लक्ष्मणगढ़ का मोदी विश्वविद्यालय बालिका शिक्षण के लिए पूरे देश में ख्यात है। मैंने वहां प्रवेश लिया। विभिन्न विषयों के एक-से-एक निष्णात गुरुजनों का सान्निध्य ऐसा मिला कि पढ़ाई में मन लग गया।

सभी तरह की सुविधाएं और घरेलू वातावरण। कभी बोझिलपन नहीं लगा। इसी विश्वविद्यालय में एक सर प्रो. पी. के. विश्नोई हैं जो पढ़ाते समय हास्य-विनोद द्वारा विविध रंगों की फुलझड़ी छोड़कर वातावरण को खुशनुमा बना देते हैं। वे रंजनकारी शिक्षा के पक्षधर हैं ताकि छात्र कठिन विषय को भी सहजता से हृदयंगम करले।

उनके द्वारा कही गई एक घटना को जब-जब भी घर-परिवार या सहेलियों के बीच याद करती हूं तो हंसते-हंसते सभी लोटपोट हो जाते हैं।

प्रो. विश्नोई सर 15 वर्ष पूर्व जब पहलीबार इस विश्वविद्यालय में आये तो लक्ष्मणगढ़ में मकान किराये के लिए इधर-उधर घूमना पड़ा। एक जगह एक सज्जन मिल गए। उन्होंने बताया कि पास की बस्ती में एक डोकरा बाहर बैठा मिलेगा। उनका मकान खाली है। वह सभी सुविधाओं से युक्त आपके सर्वथा अनुकूल है।

प्रो. विश्नोई वहां पहुंच गए। उन्हीं महाशय से जाकर बड़ी विनम्रता से पूछा, यहां डोकरा साब कहां बिराजते हैं। जवाब मिला, यहां तो कोई डोकरा साब रहते नहीं सुना गया। आगे हो तो पता नहीं। ऐसे कर प्रो. विश्नोई सर ने लक्ष्मणगढ़ का काफी हिस्सा छान मारा पर किसी ने डोकरा साब से नहीं मिलाया।

हार खा प्रो. विश्नोई पुन: वहां पहुंचे। वे महाशय उन्हें उस डोकरे के पास ले गए और मकान दिलाया। प्रो. विश्नोई बड़े चकित हुए। वे सबसे पहले उन्हीं महाशय से तो मिले थे लेकिन वे डोकरे का अर्थ बूढ़ा व्यक्ति होता है, नहीं समझकर उसका नाम समझ बैठे।

उनकी यह बात कभी-कभी उनकी कक्षा में भी कोई लड़की जब सर को याद दिलाती है तो पूरी क्लास ही ठहाकों से सराबोर हो उठती है।

करिए टालमटोल मत, मत करिए कल आज

- सीताराम गुप्ता -

ऊँचाई को जगत की, यदि करना है स्पर्श।
मन में ही रखिए सदा ,कुछ ऊँचे आदर्श।।
हृदय दीप में यदि नहीं, भरता सचमुच स्नेह।
रोशन हो सकता नहीं, अंदर बाहर गेह।।

मत दर्पण के पास जा, मत तू रूप निहार।
मन-दर्पण में झाँककर, पहले उसे सँवार।।
होती अपने आपसे, जब जीवन भर जंग।
भरता जीवन में तभी, सच्चाई का रंग।।
चखा नहीं जिसने कभी, असफलता का स्वाद।
जीवन में संभव नहीं, उसके परम प्रसाद।।
लगे पनपने जहन में, जब संशय के शूल।
फलीभूत होते नहीं, संकल्पों के फूल।।
करना जो भी काम हो, कर रखकर विश्वास।
यही सफलता सूत्र है, यही मंत्र है ख़ास।।
खाली कभी न बैठना, करते रहना कर्म।
यही जीवन का मर्म है, यही है जीवन धर्म।।
थोड़ा बहुत तनाव भी, जीवन में अनिवार्य।
उत्प्रेरक यह तत्त्व है, करने को हर कार्य।।
मन में पूर्वाग्रह न हो चिंतन रहे यथार्थ।
कर्म सदा निष्काम हो, सेवा हो निस्स्वार्थ।।
परिग्रह का परित्याग कर, सीमित कर उपभोग।
सर्वधर्म-संदेश यह, यही है उत्तम योग।।
मन में मानवता रहे, और कर्म में ध्यान।
नहीं अपेक्षित जगत में, अधिक किसी को ज्ञान।।
अच्छे इंसां की यही, होती है पहचान।
कभी किसी का वो नहीं, करता है अपमान।।
करिए टालमटोल मत, मत करिए कल आज।
लेकर फौरन फैसला, शुरू कीजिए काज।।
बद अच्छा बदनाम बुरा, किसने दी ये सीख।
नेकी ख़ुद उसमें नहीं, जिसने दी ये सीख।।
करते हैं जो कभी भी, नहीं सार्थक काम।
जग क्यूँकर सम्मान दे, उनको सीताराम।।

स्मृतियों के शिखर (75) : डॉ. महेन्द्र भानावत

सरलमना सहज चित्त के आराधक थे डॉ. मनोहर शर्मा

डॉ. मनोहर शर्मा की याद आते ही एक सुधर्मी लेखक, अति साधारण और सहज मानव तथा कहीं से लेखक नहीं होने का आत्मीय भाव रखने वाले व्यक्ति के जीवन्त होने की छवि कौंध आती है। जैसा उनका पारदर्शी मन और पारदर्शी स्वभाव रहा वैसा ही उनका लेखन सरलता, माधुर्य, चित्रात्मकता, मोहकता और संजीदगी लिये रहा। वे हिन्दी, संस्कृत और राजस्थानी तीनों में लिखते थे। वे भरपूर जानकारी के विद्वान, सबके चाहक और गुणग्राहक रहे। दूसरों की लिखाई का वे आदर करते थे। उसे प्रोत्साहन तथा प्रतिष्ठा देते और इसे वे अपना आत्म-सुख मानते थे।

बीकानेर में सन् 1955 से 1958 तक कॉलेज-अध्ययन के दौरान भाई साहब डॉ. नरेन्द्र भानावत ने सर्वश्री अगरचन्दजी नाहटा, शम्भूदयालजी सक्सेना, अक्षयचन्दजी शर्मा, चन्द्रदानजी चारण, विद्याधरजी शास्त्री जैसे दिग्गज मनीषियों से तो मेरी भेंट कराई किन्तु याद नहीं पड़ता कभी डॉ. मनोहरजी शर्मा से मैंने भेंट की।

पहलीबार नाहटाजी ने उदयपुर में उनसे मेरी मुलाकात कराई तब मैं जड़ियों की ओल स्थित भण्डारियों की घाटी के ठेठ ऊपरी छोर पर किराये के मकान में रहता था। याद पड़ता है सन् 1964 के अगस्त माह की किसी तिथि पर दोनों राजस्थान साहित्य अकादमी की एक बैठक में आये हुए थे।

मुझे किसी प्रकार की कोई पूर्व सूचना नहीं थी। सुबह कोई 8 बजे नाहटा साहब ने नीचे पोल से ही मुझे आवाज दी- 'महेन्द्रजी।' मैं तपाक से अपने कागज-कलम छोड़ बाहर आया, देखा तो नाहटाजी और उनके साथ एक दुबले-पतले महीन सफेद धोती, लम्बी आस्तीन वाला सफेद कमीज और काली टोपी, चश्मा पहने सज्जन को देख मैं क्षण भर के लिए सोच बैठा कि नाहटाजी अपने साथ सम्भवत: अपने मुनीमजी को लाये हैं। मैंने हाथ जोड़ नमन किया। नाहटाजी ने साथ वाले एकलंगी धोतीधारी सज्जन की तरफ इशारा कर बोले- 'इन्हें पहचाना! ये डॉ. मनोहर शर्माजी हैं।'

डॉ. मनोहर शर्मा का नाम सुनते ही मैं हक्का-बक्का रह गया। मेरा तन-मन श्रद्धा भाव से झुक गया। उन्होंने मुझे प्यार भरे अपने अंक में ले लिया और कहने लगे- 'महेन्द्रजी! आपको देखकर मुझे बड़ा विस्मय हुआ। मुझे कभी यह कल्पना नहीं थी कि आप इतने छोटे से और दुबले-पतले होंगे। मैं तो आपको बड़ी उम्र का कोई अच्छे डीलडौल वाला समझ बैठा था। खूब लिखा है आपने इतनी छोटी उम्र में। हमें तो आज बड़ा आनन्द आ गया।'

मैं उन्हें अपने ऊपर वाले कमरे में ले गया। वे कुछ देर खड़े रहकर उस कमरे को चारों ओर से निहारते रहे फिर बैठकर मुदित मन से बोले- 'आपका कमरा भी उतना ही छोटा है, जितने आप, साहित्य से भरपूर कहीं कोई खांचा तक खाली नहीं छोड़ा है।'

मैंने अपनी समझ को ठीक किया किन्तु सोचा कि शर्माजी साहित्य के मुनीम तो हैं ही और नाहटाजी थरपित सेठ। जब सेठ और मुनीम दोनों सहृदयी हों, तब ग्राहक कितना फूला मन हो जाता है और ऐसे में अचानक जब दोनों अपने श्रद्धावान ग्राहक के घर जा पहुंचते हैं तो उस ग्राहक के भाग्य उसी तरह खुल पड़ते हैं जैसे कोई नदी किसी पहाड़ से सर्राती हुई नीचे आकर किसी विस्तृत मैदान में अलल-खलल बन जाती है।

लेखकों को मैंने कई अन्दाजों, कई मुखौटों, अदाओं और रंगों में अंगीरस होते देखा है। निश्चय ही वे सामान्य से कुछ भिन्न लगने वाले होते हैं। अनेकों बार अपने लहजे और बातचीत के ढंग में भी मैंने उन्हें बनावटीपन बिखरते देखा है। उनका संसार भी बड़ा विचित्र होता है। सामान्य व्यक्ति जैसा जीवन जीते हैं, जैसे रहते हैं, बोलते-बतियाते हैं, वे उन सबसे भिन्न मुद्रा लिये लगते हैं परन्तु मैंने डॉ. मनोहर शर्माजी में ऐसे कहीं कोई विलक्षण लक्षण नहीं पाये। बाद में भी जब-जब किसी समारोह या फिर उनके बीकानेर स्थित आवास पर उनसे मेरा मिलना हुआ, मुझे वे सदैव ही अपनी बड़ेरी अंखियां लिये मिले।

ऐसे लेखक कम ही देखने को मिलेंगे जो अपनी बात नहीं कहकर दूसरों की बात रूचिपूर्वक सुनते हैं, समझते हैं, प्रशंसा करते हैं और उसकी प्रतिष्ठा मण्डित करते हैं। डॉ. शर्मा मुझे ऐसे ही साहित्यसेवी लगे जो सदैव दूसरों को जानने की जिज्ञासा लिये रहते हैं। उन्होंने कभी दूसरों को अन्धेरा देकर सूरज की किरणें नहीं पकड़ीं। किसी राह चलते के पांव में अपने पांव की आंटी देकर कभी किसी को नहीं पछाड़ा। कभी किसी के हक को नहीं दागा और न कभी किसी के लिए अपने हाथों की अंगुलियां ही कड़ीकाई। वे सबके बने रहकर अपने बने रहे।

शर्माजी से मैंने कई रूपों में प्रेरणा पाई है। उनका चुपचाप निरन्तर लेखन कइयों के लिए प्रेरक रहा। वे न अरी में, न बरी में, न उधो-माधो के चक्कर में पड़े। अपनी शुद्धता और साफगोई के कारण वे सभी में समान रूप में स्मरणीय रहे।

भाई साहब का डॉ. शर्माजी से बड़ा घनिष्ट और लम्बा परिचय रहा। उनकी दृष्टि में डॉ. मनोहर शर्मा उन साहित्य-मनीषियों में से थे जिन्होंने मां मरुधरा को अपनी साहित्य साधना से सरस और समृद्ध बनाया। वे लोकभूमि और लोकधर्म की गन्ध व जीवन्तता से जुड़े हुए साहित्यकार थे। लोकसाहित्य के संग्रह, सम्पादन, विश्लेषण और मूल्यांकन के क्षेत्र में उनकी सेवाएं बहुमुखी और प्रेरणादायी रहीं। उन्होंने लोकसाहित्य के सभी पक्षों- लोकगीत, लोकनाट्य, लोकगाथा, लोककथा और लोकोक्ति पर गहरी अनुभूति के साथ लिखा। लोकजीवन के कई अज्ञात और अनछुए क्षेत्रों को उन्होंने अपने अथक परिश्रम और पूरजोर सामर्थ्य से ज्योतिस्नात किया।

डॉ. शर्मा मात्र लोकसाहित्य के उद्धारक और व्याख्याता ही नहीं थे, वे सृजनधर्मी रचनाकार भी थे। साहित्य के क्षेत्र में भी कविता, कहानी, एकांकी, निबन्ध, समीक्षा, व्यंग्य, गद्य-गीत आदि सभी विधाओं में उन्होंने सफलतापूर्वक सृजन कर राजस्थानी साहित्य को समृद्ध किया। उनकी चारित्रिक सृष्टि में एक ओर राजस्थान के मध्ययुगीन रणबांकुरे और आदर्श युगलप्रेमी विचरण करते रहे तो दूसरी ओर वर्तमान परिवेश के उच्च, मध्यवर्ग के सजीव पात्रों के हेलमेल आदर्शोन्मुखी यथार्थ के सतरंगी पड़ाव नापते रहे। उनकी रचना-प्रक्रिया में लोकधर्मिता की गहराई के साथ शिल्प-विधान भी लोकसाहित्य का लालित्य लिये लकदक रहा। यह कहना कठिन है कि जीवन की सरलता और सादगी ने उनके साहित्य को प्रभावित किया या साहित्य की सरलता और सादगी ने उनके जीवन को संवारा।

भारतीय लोककला मण्डल में रहते राजस्थान की लीला-परम्परा पर जब मैंने डॉ. मनोहर शर्माजी से पूछताछ की तो उन्होंने अपने बिसाऊ की रामलीला के सम्बन्ध में बताया कि वहां की रामलीला सभी रामलीलाओं से भिन्न अपना प्रभाव लिये है। फलस्वरूप 14 अक्टूबर 1969 को मैं बिसाऊ जा पहुंचा। वहां रामलीला कमेटी के सचिव गोविन्दजी ने मुझे बड़ा सहयोग दिया। उन्होंने रामलीला के पात्रों से भी मिलवाया और बताया कि सौ वर्ष पूर्व गूगामेड़ी पर जमना श्यामण ने छोटे-छोटे बच्चों के माध्यम से खेल-खेल में रामलीला का सूत्रपात किया और बिसाऊ ठाकुर बिसनसिंहजी ने अपने गढ़ के पास इस लीला का सर्वप्रथम विधिपूर्वक मंचन कराया।

इस लीला की यह विशेषता रही कि प्रारम्भ से अन्त तक यह मूक अभिनय लिये है। राम आदि चारों भाई तथा सीता को छोड़ सभी पात्र अपने चेहरे पर मुखौटा धारण करते हैं। प्रतिवर्ष इनके लिए नई पोशाक तैयार की जाती है। मुखौटा अर्थात् चेहरा बनाने का काम चेजारे करते हैं। पोशाक में हनुमानजी की लाल, सुग्रीव की हरी, अंगद की पीली, दधिमुख की सफेद, जामवन्त की कत्थई रंग लिये होती है। राजस्थान की अन्य लीलाओं के साथ इस लीला का उल्लेख मैंने 'मेवाड़ के रासधारी' नामक पुस्तक में किया है जिसका प्रकाशन भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर से जनवरी 1970 में हुआ।

डॉ. शर्माजी ने बिसाऊ में राजस्थान साहित्य समिति नामक संस्था की स्थापना की। यहीं से 'वरदा' नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रारम्भ की। इसके माध्यम से उन्होंने कई लेखकों को लिखने की प्रेरणा दी। अनेकों को शोध-संदर्भों से समृद्ध किया। वरदा में समय-समय पर जो सामग्री प्रकाशित हुई वही अपनेआप में राजस्थानी के विपुल और अलभ्य साहित्य का खजाना है।

यह वह समय था जब राजस्थान में अन्य और भी संस्थाएं प्राचीन राजस्थानी साहित्य, लोकसाहित्य, हस्तलिखित ग्रन्थ, पट्टे-परवाने, ताम्रपत्र और शिलालेख पर अंकित अकल्पनीय और अमूल्य अनमोल धरोहर के संग्रह, संरक्षण, सम्पादन तथा प्रकाशन में अग्रणी बनी हुई थीं।

उदयपुर में पं. जनार्दनराय नागर का साहित्य संस्थान और वहां से प्रकाशित शोधपत्रिका, देवीलाल सामर का भारतीय लोककला मण्डल और वहां से प्रकाशित लोककला तथा रंगायन, प्रताप शोध प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित मज्जमिका, कृष्णचन्द शास्त्री द्वारा सम्पादित अन्वेषणा; बोरूंदा में कोमल कोठारी तथा विजयदान देथा का रूपायन संस्थान तथा वहां से प्रकाशित वाणी-लोकसंस्कृति पत्रिका; जोधपुर से डॉ. नारायणसिंह भाटी के राजस्थानी शोध संस्थान से प्रकाशित परम्परा, डॉ. रामप्रसाद दाधीच के लोकसाहित्य केन्द्र की लोकसाहित्य पत्रिका, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रकाशित रंगयोग तथा पदम मेहता द्वारा प्रकाशित माणक; डूंगरपुर में गिरीश शर्मा की वागड़ प्रदेश साहित्य परिषद की वाग्वर; पिलानी से डॉ. कन्हैयालाल सहल द्वारा प्रकाशित मरुभारती; बीकानेर से अक्षयचन्द शर्मा के भारतीय विद्यामन्दिर की वैचारिकी, अगरचन्द नाहटा के सादुल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट की राजस्थान भारती, नागरी भण्डार से विद्याधर शास्त्री की विश्वंभरा, डॉ. किरण नाहटा द्वारा सम्पादित राजस्थानी गंगा जैसी मानक संस्थाओं, विद्वान मनीषियों तथा पूंजीभूत पत्र-पत्रिकाओं का वह काल उसके बाद लौटकर नहीं आया।

यह सर्वथा रेखांकित उल्लेखनीय पक्ष है कि डॉ. मनोहर शर्मा को साहित्यिक जोत को उसी समर्पित निष्ठा, समर्पण और साधुमन से डॉ. उदयवीर शर्मा राजस्थान साहित्य समिति और वरदा को वरदायिनी बनाये हुए हैं।

बम्बई का नाहर पुरस्कार

कहते हैं, भाग्य के बिना कुछ नसीब नहीं होता। जो लिखा होता है वही होता है। अपना-अपना भाग्य जो है। यदि भाग्य में नहीं है तो भोजन आया थाल वापस चला जाता है। छोटी कक्षा में अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' लिखित 'एक बून्द' शीर्षक कविता में बड़ी खूबसूरती से उन्होंने एक बून्द के भाग्य को वर्णित किया है।

भाग्य-चक्र की जब-जब भी कहीं कोई बात सुनता हूं या चर्चा-प्रसंग चलता है तो मुझे मेरे से जुड़ी एक बात याद आती है। सन् 1983 में आचार्य तुलसी उदयपुर बिराज रहे थे। अणुव्रत का कोई प्रसंग रहा होगा, जब ब्लिट्ज के सम्पादक आर. के. करंजिया, भानीराम 'अग्निमुख' और उनके साथ दो-एक साथी और थे।

उदयपुर में अणुव्रत साहित्य समिति के संस्थापक गणेश डागलियाजी ने मुझे फोन किया कि उनके अशोक नगर स्थित निवास पर करंजिया और भानीराम अपने साथियों सहित आये हुए हैं और मुझे याद कर रहे हैं। मैं वहां पहुंच गया। देखा तो आचार्यश्री के अणुव्रत सेवियों का बड़ा अच्छा साहित्यिक जमघट था। वहीं भानीराम ने मुझे अलग से की गई एक संक्षिप्त भेंट में खबर दी कि मुम्बई के इस बार के नाहर पुरस्कार में मेरा चयन किया गया था किन्तु अचानक किसी ने खबर दी कि वहां हॉस्पिटल में राजस्थानी मासिक 'हरावळ' के सम्पादक सत्यप्रकाश जोशी अत्यन्त रूग्ण मृत्युशैय्या पर हैं।

यह सुनते ही चयन समिति के एक सदस्य ने मेरा जन्मांक देख बताया कि भानावतजी तो अभी बहुत छोटी उम्र के हैं। यह सोच वह पुरस्कार जोशीजी के खाते चला गया। जोशीजी नहीं रहे। अच्छा ही रहा कि जाते-जाते नाहर पुरस्कार उनके खाते खत पाया।

सड़क सुरक्षा अभियान आयोजित

उदयपुर। आने वाले कल को सुरक्षित बनाने के लिए युवाओं को सड़क सुरक्षा के बारे में जागरुक बनाना बेहद महत्वपूर्ण है, इसी विश्वास के साथ होण्डा मोटरसाईकल एण्ड स्कूटर इण्डिया प्रा. लि. ने उदयपुर में सड़क सुरक्षा जागरुकता सामाजिक अभियान का आयोजन किया। इंडो-अमेरिकन कॉलेज में आयोजित शिविर में 1700 से अधिक छात्रों को सड़क सुरक्षा के महत्व पर जागरुक बनाया गया।

होण्डा मोटरसाईकल एण्ड स्कूटर इण्डिया प्रा. लि. के ब्राण्ड एण्ड कम्युनिकेशन के वाईस प्रेज़ीडेन्ट प्रभु नागराज ने कहा कि देशभर के युवा कॉलेज छात्रों को सुरक्षित राइडिंग के बारे में जागरुक बनाने के उद्देश्य को लेकर होण्डा ने जनवरी में राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा जागरुकता अभियान की शुरूआत की। होण्डा हर महीने देश के 10 कॉलेजों के 15,000 से अधिक छात्रों को सड़क सुरक्षा के बारे में जागरुक बना रही है। होण्डा की यह कोरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पहल 31 शहरों के 66,000 से अधिक कॉलेज छात्रों को शिक्षित कर चुकी है। प्रभु नागराज ने कहा कि हमें खुशी है कि उदयपुर से 1700 से अधिक युवाओं ने इस कैम्प में हिस्सा लिया। कैम्प में होण्डा के कुशल इंस्ट्रक्टर्स ने छात्रों के लिए थ्योरी सेशन आयोजित किए, जिनमें उन्हें सड़क नियमों, यातायात संकेतों तथा सुरक्षित राइडिंग के लिए शिष्टाचार जैसे वाहन चलाते समय सही मुद्रा आदि के बारे में जानकारी दी गई साथ ही ड्रीम राइडिंग प्रोग्राम के तहत 45 छात्राओं को स्वतन्त्र रूप से दोपहिया वाहन चलाने का प्रशिक्षण दिया गया।

रेंज रोवर वेलार की बिक्री शुरू

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने स्थानीय रूप से निर्मित रेंज रोवर वेलार की बिक्री की घोषणा की है। भारत में इसका मूल्य 72.47 लाख रूपये से शुरू होता है। स्थानीय रूप से उत्पादित वेलार दो पॉवरट्रेन्स में उपलब्ध है। 2.0 एल पेट्रोल (184 केडब्ल्यू) और 2.0 एल डीजल (132 केडब्ल्यू) और रिडक्शिनिज्म् तथा एलीगैंस के शानदार मिश्रण की पेशकश करती है। जगुआर लैंड रोवर इंडिया लि. (जेएलआरआईएल) के प्रेसिडेन्ट एवं प्रबंध निदेशक रोहित सूरी ने कहा कि रेंज रोवर वेलार को वर्ष 2018 में लॉन्च किया गया था, तभी से इसे देश में अच्छा प्रतिसाद मिला है। अब स्थानीय रूप से निर्मित रेंज रोवर वेलार की पेशकश से हम इस प्रसिद्ध और पुरस्कार विजेता उत्पाद को पहले से अधिक आकर्षक मूल्य पर दे सकते हैं। इस प्रकार भारत में रेंज रोवर के अधिक से अधिक प्रशंसक इसे खरीदकर चला सकेंगे, जो कि एक आकर्षक, सुंदर और अनूठा वाहन है। रेंज रोवर वेलार में ऑटोमोटिव परिष्करण, भव्यता और आधुनिकता का संगम है। निरंतरता वाली वेस्टलाइन से दिखने वाले वाहन के अगले छोर के शक्तिशाली परिमाण लचीले और भव्य पिछले छोर में विलीन होते हैं और रेंज रोवर के वंश में वेलार को पृथक स्थान देते हैं। रेंज रोवर वेलार का डिजाइन अनूठा है, जिसमें कई उन्नत विशेषताएं हैं, जैसे ऑल-एलईडी लाइट्स, डीप्लॉयेबल फ्लश डोर हैण्डल्स और एक्सटीरियर पर इंटीग्रेटेड रीयर स्पॉयलर। यह वाहन किसी भी परिस्थिति में बेजोड़ क्षमता वाली लैंड रोवर की भव्य विरासत के अनुसार है, जिसका श्रेय अत्याधुनिक ऑल टेरैन प्रोग्रेस कंट्रोल सिस्टम को जाता है।

कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक प्रतियोगिता की घोषणा

उदयपुर। कैस्ट्रॉल ने बहुप्रतीक्षित कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक प्रतियोगिता का तीसरा संस्करण लॉन्च किया। मैकेनिकों की क्षमताओं की परख करने और उन्हें प्रशिक्षण देने के लिए की गई यह सबसे बड़ी पहल है। इस प्रतियोगिता में देशभर के कार और बाइक मैकेनिक अपनी क्षमताओं का परीक्षण कर सकते हैं।

कैस्ट्रॉल इंडिया लि. के प्रबंध निदेशक ओमेर डोरमैन ने कहा कि इस प्रतियोगिता की शुरुआत इंटरएक्टिव वॉयस रेस्पांस राउंड (आईवीआर) से हुई। आगे इस राउंड में कार और बाइक की श्रेणियों के 40-40 मैकेनिकों का चुनाव किया जाएगा।

मुंबई में होने वाली इस प्रतियोगिता के फाइनल राउंड में हर श्रेणी में 10-10 मैकेनिक होंगे, जो नेशनल टेलिविजन पर टॉप स्लॉट के लिए मुकाबला करेंगे। इस कॉन्टेस्ट में मैकेनिकों के थ्योरी संबंधी ज्ञान और व्यावाहरिक क्षमताओं की परीक्षा होगी।

बीकेटी टायर्स व भारत सुपर लीग में गठबंधन

उदयपुर। बालकृष्ण इंडस्ट्रीज लि. (बीकेटी) ने 'पावर्ड बाय' स्पॉन्सर्स के रूप में एशियन पेंट्स भारत सुपर लीग (बीएसएल) के साथ गठबंधन किया है। यह गठबंधन प्रचार-प्रसार एवं ब्रांडिंग सहित कई क्षेत्रों के लिए हुआ है। भारत सुपर लीग चार राज्यों - राजस्थान, हरियाणा, उत्तरप्रदेश और तमिलनाडु में आयोजित होगा। जुलाई के पहले सप्ताह में समाप्त होने वाले इस टूर्नामेंट के राजस्थान लीग का आयोजन भरतपुर, पाली, अलवर, हिंडौन सिटी, नागौर, दौसा (जयपुर ग्रामीण), गंगापुर, अजमेर और जयपुर में होगा।

बालकृष्ण इंडस्ट्रीज लि. (बीकेटी) के संयुक्त प्रबंध निदेशक राजीव पोद्दार ने कहा कि भारत सुपर लीग देश की सबसे उत्साहपूर्वक खेली जाने वाली कबड्डी प्रतिस्पर्द्धाओं में से एक है। देश के कई राज्यों में छिपी दमदार प्रतिभाओं को उभारने के उद्देश्य से, वेस्टएंड इस लीग में सहयोग देगा जो जमीनी स्तर पर कबड्डी को बढ़ावा देता है और भावी चैंपियंस को ढूंढ कर सामने लाता है।

माउंटेन ड्यू का अनूठा कार्यक्रम

उदयपुर। माउंटेन ड्यू का तीन महीने तक चलने वाला अनूठा कार्यक्रम सिनेमा इन व्हील हरियाणा, उत्तरप्रदेश और राजस्थान के गांवों में आयोजित होगा। नसीबपुरी, निदेशक, माउंटेन ड्यू एंड एनर्जी, पेप्सिको इंडिया ने कहा कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत माउंटेन ड्यू 2000 गांवों में कॉलेजों तक पहुंचेगा। कबड्डी, टग ऑफ वॉर, आर्म रेसलिंग जैसी विभिन्न गतिविधियों के साथ माउंटेन ड्यू युवाओं के साथ जुड़ेगा और गांव के सरपंच और प्रतिष्ठित लोगों के हाथों उन्हें प्रमाण पत्र व पदक दिए जाएंगे। इस पहल के तहत्, माउंटेन ड्यू विलेज कनेक्ट 18 मई को उदयपुर पहुंच दो दिन में गिर्वा तथा वल्लभनगर तहसीलों के दो गांवों का दौरा करेंगे। इसके अलावा, इस कार्यक्रम में कैरावान टॉकीज़ के साथ साझेदारी शामिल है जिसके माध्यम से माउंटेन ड्यू बॉलीवुड ब्लॉक बस्टर का अनुभव देश के प्रमुख इलाकों तक नि:शुल्क पहुंचाता है। इस साल माउंटेन ड्यू कैरावान प्रत्येक गांव तक जाएंगे और बाहुबली 2 फिल्म दिखाई जाएगी। नसीबपुरी ने कहा कि माउंटेन ड्यू का संदेश है-रिस्क उठा, नाम बना।

टेक्नो का पहला ब्रांड कैंपेन शाइन इन ऐनीलाईट शुरू

उदयपुर। ट्रांसियॉन होल्डिंग्स के तेजी से बढ़ रहे ऑफलाइन कैमरा केंद्रित स्मार्टफोन ब्रांड टेक्नो की 50 से अधिक देशों में उपस्थिति है। यह ब्रांड भारतीय बाजार में अपनी दूसरी वर्षगांठ मना रहा है और इसी के साथ कंपनी ने हाल में लॉन्च कैमॉन आई4 के दम पर वर्ष के अपने पहले ब्रांड कैंपेन शाइन इन ऐनीलाईट को शुरू करने की घोषणा की। यह चौतरफा मार्केटिंग कैंपेन दो मई से शुरू हुआ।

शाइन इन ऐनीलाईट कैंपेन में तीन डॉक्यूमेंटरी स्टाइल की फिल्मों की सीरीज शामिल होंगी। इनमें कचरा बीनने वाले से स्ट्रीट फोटोग्राफर बने विकी रॉय, एक स्ट्रीट डांसर से कोरियोग्राफर बनी चांदनी श्रीवास्तव और बगैर बालों वाली स्टाइल आइकन तोशादा उमा को फिल्माया गया है। पहली प्रसारित होने वाली फिल्म शानदार फोटोग्राफर विकी रॉय की होगी और बाकी दो फिल्में इसके बाद जल्द ही आएंगी। ट्रांसियॉन इंडिया के सीईओ अरिजीत तालपात्रा ने कहा कि हम युवाओं के लिए प्रोडक्ट तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। कैमॉन आई4 के साथ हम अपने उपभोक्ताओं के लिए सर्वश्रेष्ठ स्मार्टफोन कैमरा टेक्नोलॉजी लेकर आए हैं। इसमें नाइट एल्गोरिथम 2.0 द्वारा पॉवर्ड 16 एमपी एआई सेल्फी और एआई ट्रिपल रियर कैमरा है। चाहे कितना ही अंधेरा हो, सुपर क्वाड फ्लैश लाइट के जरिये फोटो को चमकदार बनाने में मदद मिलती है। यह कैंपेन युवाओं के जिंदादिल जोश का जश्न मनाने के लिए है, जो अपने क्षेत्रों में लाख मुसीबतों के बावजूद कामयाब हुए।

डीएवी एचजेडएल स्कूल ने जीता यू-17 सुब्रतो कप क्वालीफायर टूर्नामेंट

उदयपुर। जिंक फुटबाल अकादमी टीम ने जावर माइन्स स्थित डीएवी एचजेडएल स्कूल का

प्रतिनिधित्व करते हुए सुब्रतो कप अंडर-17 क्वालीफायर्स के रूप में अपना पहला बड़ा खिताब जीत लिया है। डीपीएस झुंझनू में आयोजित इस टूर्नामेंट में मिली खिताबी जीत के साथ जिंक फुटबाल टीम ने राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली स्कूल स्तरीय सुब्रतो कप टूर्नामेंट में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार हासिल कर लिया है।

मुख्य कोच सुरेश कटारिया ने कहा कि जावर की इस टीम ने राज्य के 13 श्रेष्ठ स्कूलों की टीमों पर अपना वर्चस्व कायम किया और सुब्रतो कप नेशनल्स 2019-20 में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करने का मौका प्राप्त किया। अब यह टीम सुब्रतो कप में हिस्सा लेगी, जिसका आयोजन भारतीय वायु सेना द्वारा खेल मंत्रालय की मदद से किया जाता है।

सैकंड चैप्टर ऑफ सिम्पोजियम की शुरुआत

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान ने देश में 'सैकंड चैप्टर ऑफ सिम्पोजियम 2019' की शुरुआत की है। इसी सिलसिले में अमेरिका स्थित आर्थोपेडिक प्रोफेशनल जॉर्ज रॉबर्ट प्रेटर, एम.एड. (पुनर्वास सलाहकार) ने नारायण सेवा संस्थान का दौरा किया। उन्होंने कहा कि नारायण सेवा द्वारा उपलब्ध कराई जा रही सुविधाएं अमेरिकी सुविधाओं के समान हैं।

सिम्पोजियम की अध्यक्षता करते संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि अपनी इस विशिष्ट पहल के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान ऑर्थोपेडिक सर्जन, चिकित्सकों, चिकित्सा और पैरामेडिकल पेशेवरों, वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं के लिए एक ऐसा नॉलेज शेयरिंग प्लेटफॉर्म बनाने का प्रयास कर रहा है, जहां ऑर्थोपेडिक इम्पेयरमेंट्स और ऑर्थोपेडिक इंटरवेन्शंस के क्षेत्र में होने वाले प्रयासों के बारे में विचार-विमर्श किया जाएगा। साथ ही नवीन टैक्नोलॉजी का आदान-प्रदान करेंगे।

एकलिंगनाथजी मंदिर का ध्वजदण्ड शिखर कलश प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

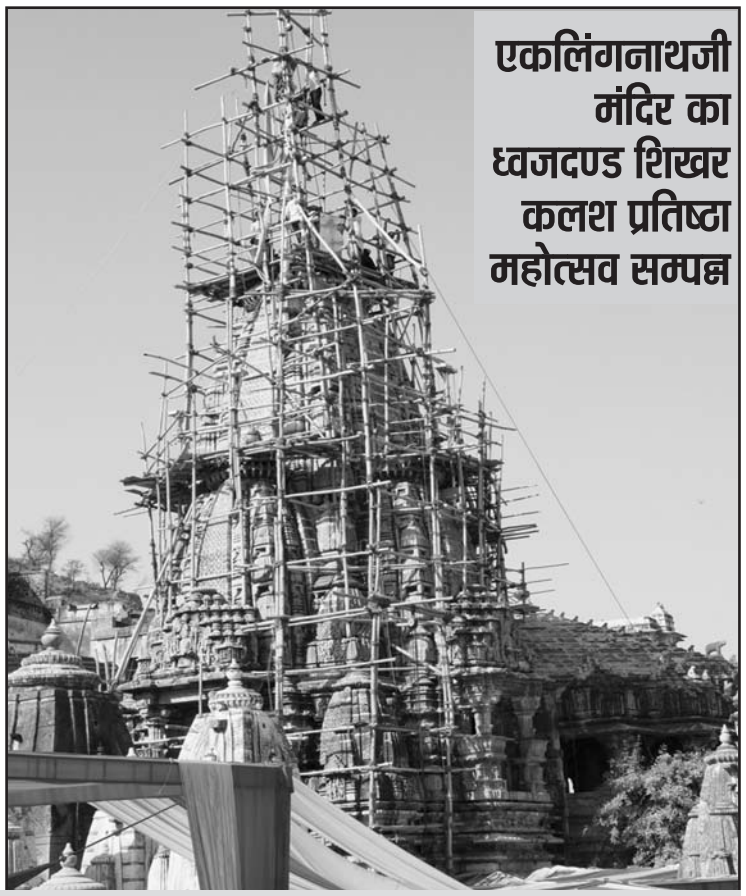

मेवाड़ अधिपति परमेश्वराजी महाराज श्री एकलिंगनाथजी मंदिर पर ध्वजदण्ड शिखर कलश प्रतिष्ठा का पांच दिवसीय महोत्सव 14 मई को सम्पन्न हुआ। श्री एकलिंगनाथजी मंदिर पर मेवाड़ के 53वें श्रीएकलिंग दीवान महाराणा उदयसिंहजी ने विक्रम संवत् 1602 में मंदिर पर ध्वजदण्ड-कलश की स्थापना करवाई थी। 474 वर्ष उपरांत मेवाड़ के 76वें श्री एकलिंग दीवान श्रीजी अरविन्दसिंह मेवाड़ ने पुनः समर्पित श्रद्धा भाव से देवप्रासाद निर्माण व जीर्णोद्धार के देववास्तुशास्त्रानुरूप अपने सुधर्म का पालन करते हुए श्री एकलिंगनाथजी मन्दिर में विधि विधानपूर्वक ध्वजदण्ड-कलश प्रतिष्ठा स्थापना का धर्मिक महोत्सव सम्पन्न करवाया। श्रीएकलिंगजी ट्रस्ट के उप-सचिव अजय विक्रमसिंह ने बताया कि मंदिर पर स्थापित स्वर्ण कलश की ऊंचाई छह तथा ध्वजदण्ड की ऊंचाई 28 फीट के लगभग है। इस अवसर पर लक्ष्यराजसिंह मेवाड़, पूर्व राजघराने के राजकुमार यतीन्द्र मोहन प्रताप मिश्र अयोध्या सहित बड़ी संख्या में गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

राजनीति के रंग

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक -

(1) मोदी और राहुल

चुनाव के इस आखिरी दौर में नरेंद्र मोदी और राहुल गांधी के रवैए में काफी बदलाव आ गया, ऐसा लगा। दोनों ने दावा किया कि उनका विरोध करने वाले उन्हें कितनी ही गालियां दें, वे उन्हें सम्मान देते रहेंगे, उन्हें बर्दाश्त करते रहेंगे। हो सकता है कि दोनों ने महसूस किया हो कि उन्होंने एक-दूसरे पर अपशब्दों की बौछार करके अपना स्तर इतना ज्यादा गिरा लिया है कि वे किस मुंह से कहेंगे कि हम राष्ट्रीय स्तर के नेता हैं?

दोनों की पार्टियों को स्पष्ट बहुमत तो मिलना नहीं है। ऐसे में वे अपनी छवि सुधारें ताकि तरह-तरह की प्रांतीय पार्टियों को बहुमत के लिए पटा सकें। कोई भी प्रांतीय पार्टी ऐसी नहीं है, जिसे भाजपा और कांग्रेस से ज्यादा सीटें मिल सकती हैं लेकिन उनके सहयोग के बिना ये दोनों अखिल भारतीय पार्टियां सरकार नहीं बना सकतीं।

इसलिए उन्हें अपनी छवि सुधारनी होगी। मोदी-जैसा नेता, जो देश का ऐसा पहला नेता है, जो अपना नाम लेकर अपनी बात कहता है वह नरम पड़ा है। यह मोदी के लिए जितना अच्छा है, देश के लिए भी उतना ही अच्छा है। यदि मोदी बहुमत के निकट पहुंच गए तो उनका सरकार बनाना सरल हो सकता है और वे दुबारा प्रधानमंत्री बन गए तो वे निश्चित रुप से अबकी बार बेहतर प्रधानमंत्री सिद्ध होंगे।

(2) बुर्का और घूंघट

केरल की मुस्लिम एजुकेशन सोसायटी ने छात्राओं को बुर्का पहनने पर रोक लगा दी है। छात्राएं ऐसा कपड़ा न पहनें, जिससे उनका चेहरा छिप जाता हो। जाहिर है बुर्के में जो नकाब लगा होता है, वह चेहरे को छिपा देता है। उसके होने पर यह जानना आसान नहीं रहता कि बुर्के के अंदर कौन है? इस संस्था ने अपने सभी स्कूलों के लिए यह नियम बनाया है। केरल के कई मुसलमान नेताओं ने माना है कि इस तरह की वेश-भूषा मलयाली सभ्यता के विरुद्ध है।

अच्छे मुसलमान बनने के लिए यह जरुरी नहीं है कि हर बात में अरबों की नकल की जाए। भारतीय मुसलमानों को इस मामले मे इंडोनेशिया के मुसलमानों को अपना आदर्श बनाना चाहिए। वे रामायण और महाभारत की कथा करते हैं। उनके कथानकों पर मनोहारी नाटकों को आयोजन करते हैं। इंडोनेशिया में भी बुर्के पर प्रतिबंध है। वास्तव में अरबों का बुर्का और भारतीयों महिलाओं का घूंघट या पर्दा, दोनों ही नारी-अपमान के प्रतीक हैं। हिंदुओं की इस पर्दा-प्रथा का महर्षि दयानंद और आर्यसमाज ने कड़ा विरोध किया था। दाढ़ी, टोपी, बुर्का, पाजामा, कुर्बानी, मांसाहार- ये ही इस्लाम नहीं हैं। असली इस्लाम तो एक अल्लाह में विश्वास है। बाकी सब बाहरी पपंच हैं, जैसे कि हिंदुओं में चोटी, जनेऊ, तिलक, छाप वगैरह हैं।

(3) मूर्ख-महामूर्ख

अब 'सर्जिकल स्ट्राइक' राष्ट्रीय बहस का मुद्दा बन गई है। हमारे प्रचार मंत्रीजी को यह पता ही नहीं है कि 'सर्जिकल स्ट्राइक' क्या होती है लेकिन प्रचार उनकी ताकत का लोहा मानना पड़ेगा कि उन्होंने कांग्रेस को मजबूर कर दिया कि वह भी अपनी 'सर्जिकल स्ट्राइकों' की डोंडी पीटने लगी है। कांग्रेस ने उन स्ट्राइकों के नाम और तिथि भी प्रसारित की है। यह ऐसा ही है कि जैसे अखाड़े में भिड़ रहे दो पहलवानों में से पहला कहे कि मैं मूर्ख हूं तो दूसरा कहे कि मैं महामूर्ख हूं।

सर्जिकल स्ट्राइक के नगाड़े पीटने की जरुरत ही नहीं पड़ती। सर्जिकल स्ट्राइकों के बावजूद हमारी संसद पर हमला हुआ, मुंबई की होटलों पर आतंकी टूट पड़े, फौजी अड्डों पर भी मार पड़ गई, पुलवामा में सामूहिक हत्याकांड हो गया। यदि एक भी सच्ची सर्जिकल स्ट्राइक हो जाती तो पाकिस्तान कश्मीर का नाम ही भूल जाता। सर्जिकल स्ट्राइक के जो वीडियो हमारी सरकार ने दिखाए, वे भी इतने बेजान थे कि उन्हें देखने के बाद लग रहा था कि सरकार खुद ही सिद्ध कर रही है कि उसकी सर्जिकल स्ट्राइक कितनी फर्जी थी। अब इस फर्जीवाड़े में देश की दोनों पार्टियां फंस गई हैं।

प्रदेश का पहला क्रॉस-फंक्शनल वर्कआउट उदयपुर में

उदयपुर। भाग दौड़ भरी जिंदगी, समयाभाव और फिटनेस की चिंता ये तीन ऐसे कारण हैं जो जिम में घंटों वर्कआउट करने के बाद भी फिटनेस को सुचारू नहीं होने देते। शुगर, बीपी सहित अन्य कई बीमारियों का सीधा संबंध तनाव से होता है। इसे देखते हुए एसएफ हेल्थटेक व शिवफिट ने क्रॉस-फंक्शनल वर्कआउट 'शिवफिट वज्र' उदयपुर में लॉन्च किया है। यह प्रदेश का पहला केंद्र होगा जहां फिजिकल और मेंटल क्रॉस-फंक्शनल वर्कआउट का बेलेंस किया जाएगा।

यह जानकारी प्रेसवार्ता में शिवफिट के शिवोहम ने दी। सीपीएस स्कूल के नजदीक बने सेंटर पर हुई लॉन्चिंग में शहर के कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

शिवोहम ने कहा कि हमारा दृष्टिकोण एक छत के नीचे सभी सुविधाएं प्रदान करना है, जो एक अच्छी तरह से संतुलित और स्वस्थ जीवन शैली की ओर ले जाती है। किसी भी चीज पर विजय पाने के लिए सबसे पहले एक स्पष्ट दृष्टिकोण की जरूरत होती है। उसके बाद कड़ी मेहनत और दृढ़ता के साथ काम करना पड़ता है। हम उदयपुर में फिटनेस की नई ऊंचाइयों को बढ़ाने के लिए तैयार हैं। एसएफ हेल्थटेक के सह-संस्थापक संकेत कामदार और वरूण रोडे ने कहा कि हम शहर को पहला क्रॉस फंक्शनल बॉक्स देते हुए काफी अधिक उत्साहित हैं। इसके साथ हम पूर्णता के साथ एक स्वस्थ उदयपुर बनाने के लिए तैयार हैं। शिवफिट वज्र का संचालन हैड कोच नरेंद्र माली की देखरेख में होगा।

गीतांजली साइंस एवं कॉमर्स कॉलेज का उद्घाटन

उदयपुर। गीतांजली ग्रुप उदयपुर द्वारा नये साइंस कॉलेज 'गीतांजली साइंस एवं कॉमर्स कॉलेज' का उद्घाटन गिट्स के निदेशक डॉ. विकास मिश्र द्वारा किया गया। इस अवसर पर कॉलेज विवरण पुस्तिका का विमोचन किया गया। मोहनलाल सुखाड़िया विवि से सम्बद्ध इस कॉलेज में बी. कॉम., बी.ए.सी. (भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित/कम्प्यूटर साइंस) एवं बी.सी.ए. के कॉर्स का संचालन किया जायेगा। प्रत्येक कोर्स के लिए 70 सीटें होंगी। नये सत्र का संचालन जुलाई से होगा। इस मौके पर गिट्स के वित्त नियंत्रक बी. एल. जांगिड़, साइंस एवं कॉमर्स कॉलेज की प्रिसिंपल डॉ. राधा चौधरी भी उपस्थित था। गिट्स के निदेशक डॉ. विकास मिश्र ने बताया कि 30 एकड़ मे फैले इस परिसर में स्थित प्लेसमेंट सेल एवं केरियर डवलपमेंट सेंटर द्वारा कम्प्यूनिकेशन सॉफ्ट स्क्लि एवं एप्टीट्यूड की ट्रेनिंग दी जायेगी जिससे विद्यार्थी किसी भी कम्पनी आधारित परीक्षा एवं प्लेसमेंट के लिए योग्य बन पाये। परिसर में स्थापित अन्तरपन्योर सेल द्वारा विद्यार्थियो को उद्यमी बनने के लिए प्रेरित किया जायेगा।

पेट की गांठ का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडीकल साइंसेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक महिला के पेट से फुटबॉल के आकार की गांठ निकाल कर सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि उदयपुर निवासी एक महिला के पेट में हमेशा दर्द की शिकायत रहती थी। इस पर परिजनों ने उसे पीआईएमएस में भर्ती कराया। सोनोग्राफी करने पर पता चला कि महिला के पेट में फुटबॉल के आकर की बड़ी गांठ है। इस पर प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. जीनी गुप्ता ने दूरबीन विधि से ऑपरेशन कर महिला के पेट से भारी गांठ बाहर निकाली। महिला की हालत सही होने पर दूसरे ही दिन हॉस्पिटल से डिस्चार्ज कर दिया गया। महिला अभी पूर्णतया स्वस्थ है। डॉ. जीनी गुप्ता पीआईएमएस के गायनिक विभाग में डॉ. अन्नपूर्णा माथुर एवं डॉ. पी. के . भटनागर के निर्देशन में कार्य कर रही है।

तूफान पीड़ित क्षेत्रों में पहुंचा नारायण सेवा

उदयपुर। ओडिशा के फैनी तूफान प्रभावित क्षेत्रों में पहुंची नारायण सेवा संस्थान की राहत टीम ने कुसपुर, बीजापुर और जगन्नाथपुरी में तूफान

प्रभावित 1500 परिवारों को भोजन के पैकेटों का वितरण किया। राहत टीम की प्रभारी व संस्थान निदेशक वंदना अग्रवाल ने बताया कि हालात के सामान्य होने में अभी वक्त लगेगा। संस्थान की टीम जिन क्षेत्रों में भोजन के पैकेट बांट रही है, वे इलाके बिजली-पानी के संकट से जूझ रहे हैं।

गांधी ने चलाया चरखला, चरखे ने दिया सुराज

-डॉ. कहानी भानावत-

महात्मा गांधी लोकमन के अनुपम चितेरे थे। लोकशक्ति की संवेदनशीलता को परख उन्होंने आम जनता के बीच रहकर भारतीय स्वतंत्रता और स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी। उनका मानना था कि राष्ट्र की धड़कन वहां का जनजीवन है। उस जनजीवन को हमसफर बनाकर जो ताकत बना सकते हैं उसके आगे हथियारों की समृद्धि का कोई वश नहीं चलता है। उन्होंने लोकशक्ति को अपने साथ एकीकृत किया।

गांधी हमारे बीच कोई विभूति नहीं थे। कोई अवतार नहीं थे और न ही कोई देव पुरुष थे। वे जनता के बीच सदैव एक मामूली जन बने रहे इसलिए सब उनके होते रहे। कविवर सोहनलाल द्विवेदी ने यह ठीक ही लिखा-

चल पड़े जिधर दो डग मग में
चल पड़े कोटि पग उसी ओर।
गड़ गई जिधर भी एक दृष्टि
गड़ गये कोटि दृग उसी ओर।।

सच तो यह है कि गांधी लोकजीवन में एक ऐसे कल्प थे जिन्होंने न केवल आजादी दिलाई अपितु निराश्रितों, अपाहिजों, अन्त्यजों और असहायों को एक भरोसा, संबल, सहारा और सांत्वना दी जिससे सब उनके बन गये। उन्होंने अपने को कभी न महान बताया और न महामानव ही कहा। तब भी सब उन्हें महात्मा कहकर संबोधित करते रहे।

गांधी को हर व्यक्ति ने स्वीकार किया। वह क्या जादू था कि जब एक गडरिये से मैंने सवाल किया कि क्या तुमने गांधी का नाम सुना तो वह बोला- खूब सुना। वह मेरी तरह बकरियां और गाडरे चराता था।' एक हरिजन बालिका ने अपनी मुस्कान बिखेरते हुए कहा- 'गांधीजी मेरी तरह झाड़ू लगा कर सफाई करते रहे।' इसी तरह जूते गांठते मोची ने कहा- 'गांधी ने हमें अहिंसा दी और वह मेरी तरह मेहनत कर गुजारा करते थे।'

गांधी की सबसे बड़ी देन यही रही कि हर हाथ को रोजगार मिले। मुख्यत: उन्होंने गांवों में ऐसी अनेक महिलाओं को देखा जो बेसहारा थीं किंतु स्वाभिमानी थीं। वे अपनी कमाई कर अपना और अपने परिवार को भरण-पोषण करना चाहती थीं।

यह सोच गांधीजी ने सबको चरखा दिया। दीप से दीप जलाकर जैसे उजास फैलता है उसी तरह घर-घर में गांधी का चरखा चलना शुरू हो गया। 'जो चरे सो भरे और नी चरे तो भूखा मरे' जैसी कहावत को चरखे ने गति दी। चरना अथवा चलते रहना का पुरुषार्थ करने वाला सदैव भलाचंगा रहता है। गांधी के चरखे ने प्रत्येक के जीवन में पुरुषार्थ और स्वावलंबन के माध्यम से स्वाधीन चेतना को जन्म दिया।

यह ठीक ही कहा गया है कि चरखे का तार-तार जीवन की सार-सार डोरी है। यह डोरी स्वांस की वह धड़कन है जिससे सकारात्मकता का प्रवाह बनता है। जैसे अच्छी धुनी हुई रूई से तार निकलता है उसी तरह कर्म-कसौटी पर जीवन कसता है तब पसीना-पसीना तार-तार होता है। उधर तार-तार की कूकड़ी तैयार होती है और इधर पुरुषार्थ का पौरूष।

उस पराक्रम जीवन के नाना ज्ञान-विज्ञानादि अनुभवों की कूकड़ी बुनती चलती है। यही जीवन की सच्चाई है। चरखे की तरह इस जीवन में तार, लय, गति, प्रगति और मति-रति है।

चरखे ने न जाने कितनी असहायों और विधवाओं को सहारा दिया है। बुझते मन को जीवन की ज्योति दी है और पुरुषार्थ के पांखों पर संबल की सीढ़ियां लांघते भावी को सुदृढ़ बनाया है। चरखे ने न केवल रोजगार ही दिया, हर हाथ को कर्मशील बनाया।

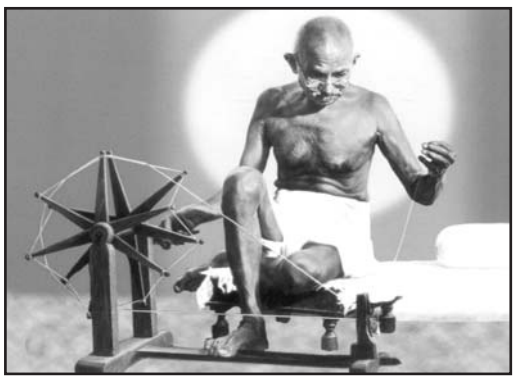

इसका असर यह पड़ा कि लोगों ने विदेश से बने कपड़ों का त्याग कर हाथ का बना खद्दर अर्थात् खादी पहननी शुरू करदी। इससे व्यापार पर भी बड़ा असर पड़ा और स्वदेशी आंदोलन ने बल पकड़ा। गांवों में, पूरे मेवाड़ में तब स्वतंत्रता आंदोलन की अलख जगगई और महिला शक्ति के कंठों पर गांधीजी, उनका चरखा और खादी चढ़गई। तब जहां भी वार-त्यौहार, विशेष उत्सव और मेलों-ठेलों में महिलाओं का झुंड का झुंड जुड़ा यह लोकगीत प्रमुख स्वर बन गया-

गांधीजी दरसण दे गया
घणा दनां में आया गांधीजी, आया गांधीजी
घर-घर चरखा चलाय।। गांधीजी।।
रेंट्यो तो है रंगरंगीलो, रंगरंगीलो
ताण्या है लाल गुलाल।। गांधीजी।।
वायल, मुलमुल छोड़ दो गांधीजी,
छोड़ दो गांधीजी
कर लो खादी से प्यार।। गांधीजी।।

अर्थात् गांधीजी ने आकर हमें दर्शन दिये हैं। बहुत दिनों बाद गांधीजी आये और घर-घर में चरखा चला गये। रेंट्या अर्थात् चरखा रंगरंगीला है और चरखे की ताण्या लाल गुलाबी हैं। वायल और मुलमुल पहनना छोड़दो। बहनों! खादी से प्यार कर लो।

राजस्थान में और भी कई गीत चरखे को लेकर प्रचलित हुए। कुछ गीत तो आज भी जबान पर चढ़े हुए हैं। एक गीत में तो गांधीजी स्वयं चरखा कात रहे हैं और अपने हाथ से ताकरे के सहारे महीन-महीन पूनी का लंबा-लंबा तार निकाल रहे हैं। उन्होंने खद्दर पहन रखा है। चरखे को चलाते-चलाते वे गा रहे हैं-

चाल रे चरखला, हाल रे चरखला
ताकू तेरो सोवणो, लाल गुलाबी माला
चरकूं मरकूं फिरै घेरणी, मधरो-मधरो चाल
गड्डी तेरी रंगरंगीली, तकली चक्करदार
चोखो बरायो दमकड़ो, तेरो कूकड़िये री लार
कातण वाले गांधी बाबा, बैठे खद्दर धार
महीं-महीं वी पूणी कातै, लंबो काढ़े तार

बाड़मेर-जैसलमेर के रेतीले अंचल में तो चरखा लंगों और मांगणियारों में बहुत ही लोकप्रिय हो गया। सबसे पहले नूर मोहम्मद लंगा ने अपनी ढाणी से निकल कर पूरे राजस्थान में ही नहीं अपितु देश के प्रत्येक अंचल और विदेशों तक में इस गीत से सर्वाधिक लोकप्रियता ली और पर्याप्त यश अर्जित किया।

लंगा बंधु इस गीत-संगीत में इतने लवलीन हो जाते कि श्रोता सुनते-सुनते स्वर्गीय आंनद के अलौकिक लोक में पहुंच जाते। यह गीत था-

घूंम रे चरखा घूंम.....
म्हारो अंग ढकेला थूं .....
म्हारी नथड़ी रो मोती थूं.....।।

राजस्थान के बाहर तेलुगु में प्रचलित लोकगीत में कहा गया कि हे पुत्रियों! चरखा कातो। गांधीजी की जय-जयकार करते हुए सूत के तार निकालो। इसी तरह तमिल लोकगीत में गांधीजी को रक्षक बताते उन्हें ऋषि-महर्षि का संबोधन देते हुए कहा- 'गांधी ऋषि नम्मे काप्यात्तुं महाऋषि गांधी ऋषि।'

एक अन्य गीत में गांधीजी स्वयं कह रहे हैं- 'मैं भारत के अनाथ बच्चों के लिए चरखा कातता हूं।' इसी तरह पंजाब, हरियाणा, गुजरात, मणिपुर, मालवा, महाराष्ट्र और ठेठ कश्मीर तक चले जाइए, चरखा लोकशक्ति का सशक्त जागरण बना हुआ है। चरखे ने आजादी और अनुशासन का समवेत स्वर दिया। असहायों को सहारा दिया। निर्धनों को धन दिया और बेकामों को कामगार बनाया। गरीब के आंसू पौंछते हुए उसे स्वाभिमान से जीना सिखाया।

तभी तो गीत की यह पंक्ति बनी- चरखे ने दिया सुराज, हमरो कोई क्या कर लेई।' अर्थात् चरखे ने हमें स्वराज सुराज दिया है।

चरखा यहीं तक सीमित नहीं रहा। राजस्थान में तो ससुराल में जंवाइयों की बुद्धि परीक्षा में भी इसकी बाजी चली। विवाह के बाद आने वाली प्रथम दीवाली पर आणा अर्थात् मुकलावा लेने जाने पर शयन कक्ष के बाहर ताला जड़ दिया जाता है और प्रात: सवेरे उस कक्ष में सोये जंवाई को पारसी के माध्यम से उसका अर्थ बताने को कहा जाता है। यह पारसी चरखे की प्रधानता लिए होती है जिसमें चरखे से जुड़े सौलह अर्थ होते हैं। चरखे से जुड़े ये सौलह अंग मिलकर ही उसे पूर्ण बनाते हैं।

यथा- (1) चरखा (2) ताणियें (3) तुम्बड़ (4) कूकड़पन्या (5) माल (6) ओदाणी (7) कूकड़ी (8) ताकरा (9) पाटकड़ी (10) घोड़ला (11) चमरका (12) चरकली (13) भूंगरी (14) पूणी (15) माचली (16) कातनेवाली।

फूलों के प्रसंग में चर्चा चलने पर कहा जाता है कि सर्वश्रेष्ठ फूल कौनसा होता है। फूलों में गुलाब, कमल, सूरजमुखी, गेंदा, हजारी, कनेर जैसे अनेक नाम लेने पर भी सही उत्तर नहीं बन पाता है लेकिन केवल एक फूल ही ऐसा होता है जो न सड़ता है, न झड़ता है और न जर्जरित होता है। उसमें रूप, रस और गंध भी नहीं होती किंतु उसके तार-तार रेशे से कपड़ा बुनता है जो पूरी दुनियां को नग्न होने से बचाता है। वह फूल है कपास का। एक कविता में यह ठीक ही कहा गया-

मुझे खुशबू का नहीं,
कपास का फूल चाहिए
ताकि मैं उघाड़ी दुनियां का तन ढक सकूं।

चक्की और चरखा भारतीय महिलाओं की सदियों से चली आई सम्पदा है। दोनों हाथों के जैसे ये दो हथियार ही हैं। चरखा और चक्की दोनों गतिवान, चलायमान हैं। जीवन भी गतिवान है। इसमें कहीं ठहराव नहीं है। जो गतिमान है वह पुरुषार्थी, श्रमशील और निर्मल है- बहता पानी निर्मला कहा गया है वैसे ही बहता जीवन दीर्घता है।

गांधीजी ने इसीलिए इनकी ताकत को पहचाना। उन्होंने चरखे को महाशक्ति कहा। विनाशकारी हथियार महाशक्ति हो भी नहीं सकते। जो निर्माण कारी है वही वस्तुत: शक्ति है। जिसके हृदय में दया, करुणा, सत्य, सहानुभूति, समता और अहिंसा है वह परम शक्तिवान है। चरखा इसीलिए चक्र है।

कृष्ण के पास सुदर्शन चक्र था तो गांधी के पास सुदर्शन चरखा। इसीलिए चरखा स्वतंत्रता संग्राम का अमोघ अस्त्र बन गया। चरखा भारतमाता का जीताजागता प्रतीक बन गया इसलिए वह हर घर, हर महिला का सिंगार बन गया।

चरखा समूह का प्रतीक है। पूरे परिवार की भावना उसके अंग-अंग में समाई हुई है। देवरानी और जेठानी में आपसी संप है। इसी संप-सौहार्द्र के कारण दोनों मेलमिलाप से घर के हर कार्य में साथ-साथ हैं। फिर चरखे से वे अलग कैसे हो सकती हैं। एक गीत में सूर्योदय से पूर्व ही दोनों कातने बैठ गई।

बहू उन सबसे आगे निकल गई। उसने अपने पति से कहा- दोनों के चरखे बढ़-बढ़ कर चल रहे हैं पर मेरा चरखा चकरी हो रहा है। ननदबाई रुई पकड़ा रही है। सपूती सासू ओट रही है। देवरानी ने दो कूकड़ी कात निकाली जबकि जेठानी ने उससे बढ़चढ़ चार कूकड़ी काती।

प्राण प्रिये! आपकी प्रियतमा को उनसे भी आगे हो निकल छह कूकड़ी निकाल दी। पत्नी अपनी कातने की कला से प्रियतम को रिझाना चाहती है। चरखा श्रम और निर्माण दोनों की सीख दे रहा है। गीत है-

देराणी जेठाणी बैठी कातवा ए सूरज री ऊगाळ
वध-वध चालै मारुजी चरखला जी
म्हैं भी ढाल्यौ मारुजी पीढ़लो जी
चरखो दियो रे चलाय। वध-वध चालै ....
देराणी फेरै चरखो ऊंतावळो जी
कांई जेठाणी जी रह्या धमकाय
म्हारो तो चरखो चकरी हो रह्यो जी
सासूजी बैठ्या मारुजी बीखणै
बाईजी रह्या रुई पकड़ाय। वध-वध चालै ....
देराणी काती मारूजी दोय कूकड़ी जी
जेठाणी जी काती चार
थांरी धण काती दै एकली जी।

इधर आदिवासियों में भी गांधी बाबा अपरिचित नहीं हैं। उनमें गांधीजी राष्ट्रपिता से भी अधिक आजादी के पिता के रूप में याद किये जाते हैं। वे भी गांधी के रूप-स्वरूप और कामकाज से परिचित हैं। एक गीत में यह भाव देखिये-

गांधी आजादी नो बाप रे, गांधी हंई आव रे
घोड़ा तांई धोत्यो रे, लांबो ने कुरतो पेरियो रे
गुलामी नी करनी रे, भूरिया भगाया रे।

अर्थात् गांधी आजादी का बाप है। वह इधर आ रहा है। उसने घुटनों तक धोती पहनी हुई है। लंबा कुर्ता पहन रखा है। वह कह रहा है किसी की गुलामी नहीं करनी है। उसने भूरे लोगों को, अंग्रेजों को भगा दिया है।

सच तो यह है कि जब घर-घर चरखा चलेगा तो खेत-खेत रहट चलेगा। रहट चलेगा तो हर खेत को पानी मिलेगा। हर खेत में जब पानी पहुंचेगा तो हर आदमी को अन्न मिलेगा। ऐसे जब सबको रोटी मिलेगी तो रोजी मिलेगी और कपड़ा नसीब होगा तो मकान तो मिल ही जायेगा। जब इन सबकी पूर्ति हो गई तो गरीबी की रेखा ही मिट जायेगी।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।